॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

जून, 2014 वर्ष 17, अंक 6	दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110	वार्षिक शुल्क 100 रुपये
विक्रमी सम्वत् 2071	दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756	ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये		कुल पृष्ठ 24

ईश्वर की इच्छा होती या नहीं?

❒ खुशहालचन्द आर्य

इस प्रश्न पर अधिकतर वैदिक विद्वान एक स्वर से यही कहेंगे कि ईश्वर की इच्छा नहीं होती। वह राग, द्वेष, ईर्ष्या, घृणा, काम, क्रोध, लोभ, मोह, इच्छा व दुख व सुख सभी से परे है। हम इच्छा का अर्थ यही लगाते हैं कि अपनी मनमानी करना। किसी पर खुश होकर वरदान देना, किसी पर नाराज होकर श्राप दे देना या भक्त के याद करने पर उसके दुख को मिटाने के लिये दौड़े-दौड़े जाना। ऐसे काम ईश्वर कभी नहीं करता है। हां, ईश्वर जीव के परोपकार के लिये बिना किसी स्वार्थ के निस्वार्थ भाव से अपनी न्यायिक व निष्पक्ष न्याय व्यवस्था द्वारा काम जरूर करता है। इसमें भी ईश्वर की इच्छा का होना आवश्यक है। जैसे कारण के बिना कोई कार्य नहीं होता, वैसे ही बिना इच्छा के कोई कार्य नहीं होता। पहले कारण होता है, फिर कार्य किया जाता है। कारण और इच्छा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जीव को पहले कारण होकर इच्छा बनती है और निर्जीव प्रकृति के लिये सिर्फ कारण ही होता है। जड़ होने से उसकी कोई इच्छा नहीं होती। जैसे सूर्य की गर्मी से समुद्र के पानी की भाप बनी और वृष्टि हुई। इसमें वर्षा होने का कारण सूर्य की गरमी से भाप का बनना है। परन्तु जीव को भूख लगी और उसने खाने की इच्छा की, तब वह भोजन करता है। इसमें भोजन करने का कारण भूख लगना और फिर इच्छा का होना दोनों जरूरी हैं। इसलिए जीव के लिये कारण के साथ इच्छा का होना भी बहुत जरूरी है। यदि मनुष्य को भूख लगी लेकिन उसने उपवास कर रखा है, उसने खाने की इच्छा नहीं की तो वह भोजन नहीं करेगा। इसलिए भोजन करने के लिए भूख का लगना कारण और खाने की इच्छा करना दोनों जरूरी हैं।

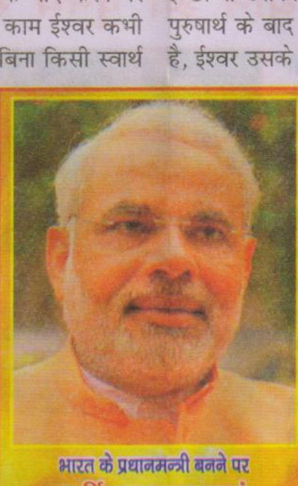
भारत के प्रधानमन्त्री बनने पर
हार्दिक शुभकामनाएं

ईश्वर प्रलय से सृष्टि रचता है और सृष्टि से प्रलय करता है। और यह सब काम सही अवधि के अनुसार सुव्यवस्थित ढंग होते हैं। जो काम अवधि के अनुसार और सुव्यवस्थित ढंग से होता है, उसमें बुद्धि का होना जरूरी है। बुद्धि में कोई काम करने की कल्पना हुई वही उसकी इच्छा है। ईश्वर अपनी न्याय व्यवस्था से पूरी सृष्टि की व्यवस्था करता है। न्याय व्यवस्था जड़ है, वह स्वयं कुछ नहीं कर सकती। उससे करवाने वाली एक चेतन शक्ति है, वही ईश्वर है। इसलिए ईश्वर की इच्छा से उसकी न्याय व्यवस्था क्रियान्वित होती है। दूसरा प्रमाण पूर्ण पुरुषार्थ के बाद अच्छे काम के लिये जो मनुष्य ईश्वर से प्रार्थना करता है, ईश्वर उसके सद्बुद्धि देकर अच्छे काम करने में सहयोग देता है। यह भी ईश्वर इच्छा ही कहलाई जायेगी। जिसमें प्राण होंगे, उसमें इच्छा होना जरूरी है। इच्छा ही जीव में गति लाती है, बिना इच्छा के गति नहीं आती। मेरी कहीं जाने की इच्छा होगी तभी मैं पैर को उठाऊंगा और मेरे पैरों में गति आयेगी। मनुष्य अपने स्वार्थ के लिये अपनी इच्छा से न्याय और अन्याय, अच्छा और बुरा दोनों ही काम करता है। परन्तु ईश्वर सिर्फ न्याययुक्त, निष्पक्ष व परोपकार के लिये ही काम करता है। उसका अपना कोई स्वार्थ नहीं होता। तब वह अन्याय व पक्षपात क्यों करेगा? उसकी इच्छा किसी को हानि पहुंचाने की नहीं बल्कि लाभ पहुंचाने की होती है।

जब हम कहते हैं कि ईश्वर मनुष्य के संचित कर्मों का फल अनेक जन्म-जन्मान्तरों तक भी देता है। यह भी ईश्वर की इच्छा को सिद्ध करता है। ईश्वर की इच्छा न्यायसंगत और निष्पक्ष होती है। वह किसी जीव को अपने स्वार्थ के लिये किसी को फल देने में कम या अधिक नहीं करता। कारण ईश्वर में अपना-पराया का भाव बिलकुल नहीं होता है। इच्छा वह होती है जो स्वार्थ के लिये की जाती है, पर ईश्वर का अपना कोई स्वार्थ नहीं होता। वह हर काम परमार्थ की भावना से करता है। इसलिए ऐसी इच्छा को इच्छा न कहकर ईक्षण कहते हैं।

प्रलय और सृष्टि की रचना करते समय ईश्वर अपनी इच्छा का

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रयोग जरूर करता है। जो चीज ईश्वर की जानकारी में रहती है, उसमें बुद्धि का होना जरूरी है। और बुद्धि ईश्वर के अनुसार काम करती है। इसीलिए इच्छा का होना भी जरूरी हो गया। इच्छा अपनी न्याय व्यवस्था में स्वयं भी बंधा हुआ है। वह किसी भी जीव को उसके किये कर्मों से अधिक या कम फल नहीं दे सकता। इसीलिए हम कह देते हैं कि ईश्वर की स्वयं की कोई इच्छा नहीं होती। ईश्वर का किसी जीव से द्वेष व राग नहीं होता। इसीलिए ईश्वर को किसी की हानि करना और किसी को लाभ देने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। इसीलिए ईश्वर को इच्छारहित कहते हैं। हम कहते हैं कि ईश्वर एक पल में सृष्टि की रचना और विनाश कर सकता है। इसका तात्पर्य यह है कि ईश्वर में इच्छा-शक्ति तो है पर वह अपनी इच्छा से किसी को हानि व लाभ नहीं पहुंचाता। सिर्फ उसके किये अच्छे या बुरे कर्मों का फल सुख या दुख में देता है। कारण उसका किसी भी जीव से अपना व्यक्तिगत राग या द्वेष नहीं है। ईश्वर न किसी से प्यार करता है और न किसी से द्वेष रखता है। इसीलिए ईश्वर को निर्लेप भी कहते हैं। ईश्वर जीव के उसके अच्छे या बुरे कर्मों का फल स्वयं नहीं देता, अपनी न्याय व्यवस्था से देता है, पर न्याय व्यवस्था चेतन न होने से अपनी न्याय व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए वह अपनी बुद्धि व इच्छा का प्रयोग जरूर करता है।

ईश्वर केवल दो काम करता है। पहला काम सृष्टि को रचना, पालन और अवधि पूरी होने पर विनाश करना यानी प्रलय करना। और फिर प्रलय की अवधि पूरी होने पर फिर सृष्टि की रचना करना। यह कर्म अनंतकाल तक चलता रहता है। इस कर्म का न आदि है और न अन्त है। दूसरा कर्म जीव को उसके किये अच्छे या बुरे कर्मों के अनुसार दूसरी योनि में भेजकर या दुख और सुख के रूप में फल देना है। दोनों काम ईश्वर केवल जीव के कल्याण के लिये करता है। मनुष्य ईश्वर की सबसे उत्तम, सुन्दर और अन्तिम योनि है। जीव मनुष्य योनि में आकर या तो अच्छे कर्म करके मोक्ष यानी परमानन्द को प्राप्त करता है या फिर इसी मनुष्य योनि में या निम्न योनियों पशु-पक्षी, कीट-पतंग की योनि में जाता है। मनुष्य योनि अन्य योनियों से उत्तम योनि इसलिए भी है कि ईश्वर ने मनुष्य को अच्छे-बुरे का, चिन्तन-मनन करने के लिये उसे बुद्धि दी है। जिससे सोच विचार करके बुरे कर्मों से दूर रहकर अच्छे कर्म करता हुआ मोक्ष को प्राप्त करे, जो उसका अन्तिम लक्ष्य है। मोक्ष में जीव ईश्वर के सान्निध्य में रहकर उसके आनंद का भोग करते हुए मोक्ष की अवधि को समाप्त करके पुनः धरती पर मनुष्य योनि में आ जाता है।

मनुष्य एक अल्पज्ञ प्राणी है। वह चाहे जितना भी परोपकार करे, फिर भी उसको थोड़ा-बहुत अपना स्वार्थ रहता ही है। मनुष्य अच्छे या बुरे जो भी कर्म करता है, उसके पीछे उसकी इच्छा का होना जरूरी है, जैसे जब भूख लगती है तो भोजन करने की इच्छा होती है। भोजन करने के बाद भूख मिट जाती है। भूख का मिट जाना भोजन करने का

(शेष पृष्ठ 22 पर)

डी.ए.वी. के यशस्वी प्रधान श्री पूनम सूरी जी का अभिनन्दन

आर्यसमाज एवं डी.ए.वी. संस्थाओं के यशस्वी प्रधान ''श्रीमान पूनम सूरी जी'' जो शिक्षा में वैदिक विचार धारा एवं मूल्यों के प्रमुख पक्षधर होने के साथ पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान के समन्वित आलोक के प्रबल समर्थक ही नहीं वरन इस क्रान्तिकारी विचार धारा को सतत् गतिमान बनाने के लिए अहर्निश प्रयत्नशील भी हैं। ऐसे प्रखर राष्ट्रवादी चिन्तक का विकासपुरी स्थित वेदव्यास डी.ए.वी. विद्यालय द्वारा आयोजित आध्यात्मिक सम्मेलन में आगमन और इस अवसर पर उनका ''शिक्षक एवं आचार्य का व्यक्तित्व तथा बदलते हुए परिवेश में उसकी भूमिका'' नाम विषय पर दिया गया उद्बोधन बेहद प्रेरणायुक्त एवं मर्म स्पर्शी था। उन्होंने कहा 'शिक्षक भाग्य का भगवान और युग का शिल्पी होता है। वह अपी कुशल प्रतिभा एवं तीक्ष्ण मेधा से अनघढ़ पाषाण खण्डों एवं चट्टानों को तराश-तराश कर उन्हें युग का विधाता एवं देवता बनाकर धरा-धाम पर अवतरित करता है।

प्रि. चित्रा नाकरा जी ने ''श्रीमान पूनम सूरी जी'' का भाव भरा अभिनन्दन एवं सम्मान करते हुए कहा-''जो लोग अपने जीवन का कतरा-कतरा राष्ट्र देवता एवं मातृभूमि के चरणों में अर्पित करते हैं उनकी शौर्य कथाएँ इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर अमर होकर सदा मुस्कुराती हुई लोगों की प्रेरणा शक्ति बन जाती है''। इस अवसर पर विद्यालय के अध्यक्ष श्रीमान नरेन्द्र कुमार ओबेराय जी एवं प्रबन्धक श्रीमान जी.एस. साहनी जी ने श्रीमान पूनम सूरी के कर कमलों से विद्यालय स्थल पर रोग रोधक शक्ति को उत्पन्न करने वाले 'कर्पूर वृक्ष' का रोपण स्मृति रूप में करवाया तथा अपने प्रेरणायुक्त विचार रखे।

प्रसन्नता का रहस्य

ऐसा अक्सर होता है कि जब हम अपना प्रतिदिन का कार्य पूरी ईमानदारी से करते हैं, उसके क्रियान्वयन में किसी प्रकार की हिचकिचाहट भी नहीं दिखाते, चाहे उसका परिणाम भले ही कुछ भी हो, मगर उससे हमें प्रसन्नता प्राप्त होती है। सन्तोष मिलता है।

इसी प्रसंग में कहा गया कि-"मनुष्य को यह आभास होना चाहिए कि उसने अपने कर्तव्य का पालन किया है।"

एक अमेरीकन विद्वान के अनुसार उसने बचपन में ही उद्यम करने की आदत डाल ली थी। परिश्रम करने से ही उसे सबसे अधिक प्रसन्नता प्राप्त होती थी। इस आदत का प्रतिफल भी उसे प्राप्त हुआ। कुछ युवक विश्राम का गलत अर्थ लगाते हैं। वे सोचते हैं कि अपने कार्य से मुंह मोड़ लेना, प्रयत्नों से विमुख होना ही विश्राम है, किन्तु उसे सबसे अधिक विश्राम तब मिलता है, जब वह एक काम को पूरा करके दूसरा काम करने लगता है।

जब पढ़ते लिखते या काम करते समय मस्तिष्क थकान अनुभव करने लगे तो बाहर की खुली हवा और धूप में चले जाइए और अनुभव कीजिए कि आप थकान से छुटकारा पा रहे हैं। शरीर को स्वस्थ और स्फूर्तिदायक बनाने का प्रयत्न कीजिए। इन विचारों और एहसास से आपका मस्तिष्क और स्थिर हो जाएगा। शरीर को स्वस्थ्य रखने के प्रकृति के प्रयत्न हमेशा चलते रहते हैं। इसका उदाहरण है कि जब हम सोते हैं तब भी हमारे दिल की धड़कनें जारी रहती हैं। हम सदा प्रकृति के निकट रहने का प्रयत्न कर और उसका अनुसरण करें। इसके परिणामस्वरूप हमें सुखद गहरी नींद, पूर्ण पाचन शक्ति और दूसरे दिन के कार्य के लिए पूरी ऊर्जा प्राप्त होती है। मैं समझता हूँ कि श्रम का यही मुख्य पुरस्कार है जो हमें प्राप्त होता है।"

दुनिया में जितने भी सफल व्यक्ति हुए हैं, वे किसी भी क्षेत्र में क्यों न हों, उन्होंने प्रसन्नता को बहुत ही अधिक महत्व दिया।

प्रसन्न रहना, हंसते-मुस्कराते रहना भी सफलता का एक रहस्य है। विद्वानों ने अपने अमूल्य विचार और अनुभव आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अनमोल खजाने के रूप में दिए हैं।

जैसे "अच्छे स्वभाव के कारण हमारे लिए काम का सदा वही महत्त्व होना चाहिए जो मछली के लिए जल का होता है। हमें लोगों के मुख से यह सुनकर आश्चर्य होता है कि उन्हें यह काम पसन्द नहीं या वह इसके बदले वह काम करता तो ज्यादा अच्छा होता। हमारे सामने जब भी कोई काम आया हमें उसके विषय में कभी नहीं सोचना चाहिए, बल्कि जी-जान से उसे करने में जुट जाना चाहिए और मस्तिष्क में हमेशा यह रहना चाहिए कि जिस प्रकार रात के बाद दिन का होना या आना निश्चित है, उसी प्रकार मेरे काम का सम्पन्न होना भी निश्चित ही है।

लिंकन ने कहा था-"भगवान भी जन-सामान्य को ही अधिक प्यार करता है, इसीलिए तो उसने जन मानस की संख्या अधिक और दूसरों की कम रखी है। अपनी प्रसन्नता के सभी उपहारों को दूसरों को समर्पित करने से बढ़कर और कौन सा दैवी कार्य हो सकता है। जो इस प्रकार के कार्यों में लगा हुआ है, उससे बढ़कर और कोई धनी नहीं हो सकता। दूसरे लोगों पर भगवान का वरदहस्त रहे, यही स्वर्ग का सबसे बड़ा सुख है।" जो लोग दूसरों के अंधकारपूर्ण जीवन में अपने प्रयत्नों से सूर्य का प्रकाश पहुँचाते रहे हैं, इस संसार में युगों-युगों तक उनकी स्मृति बनी रहेगी, वक्त की गर्द उन्हें ढक नहीं सकती, वे अमिट रहेंगी।

दूसरों को आनन्द देने से बढ़कर कोई सुख नहीं- दूसरों को आनन्दित करने से बढ़कर और कोई आनन्द नहीं है। दूसरों को सुख देकर मनुष्य को जिस आन्तरिक आनन्द की अनुभूति होती है, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। "धन से मनुष्य को कभी आनन्द की प्राप्ति नहीं हो सकती, न ही आज तक हुई है, यह हमें हमेशा स्मरण रहना चाहिए, हमारे लिए यही आनन्द की बात होनी चाहिए।

इसी सम्बन्ध में फ्रेंकलिन ने भी कहा है- **"धन ने आज तक किसी को भी प्रसन्नता प्रदान नहीं की क्योंकि आनन्द प्रदान करना धन का स्वभाव ही नहीं है।"**

सच्चा सुख और सच्चा आनन्द तो पर-उपकार अर्थात् परोपकार से ही प्राप्त होता है। जिन्होंने परोपकार किया है, उनका जीवन सुखी रहा है। वास्तव में सच्चा सुख उन्होंने ही पाया है। धन से सुख की कामना करने वाले स्वयं को भ्रमित किए हुए हैं, वे स्वयं को धोखा देते हैं। इस संदर्भ में हम प्रसिद्ध कवयित्री जीन एंग्लो का उदाहरण ले सकते हैं। उन्हें अपनी पुस्तकों से जो भी आय होती थी, वे उसे दान कर दिया करती थी। उन्होंने एक कॉपीराइट भोज निर्धारित किया हुआ था। उनके निवास के समीप के जो अस्पताल होते थे, वहाँ से जो निर्धन रोगी घर जाने वाले होते थे, उन्हें वे सप्ताह में तीन बार इस भोज पर आमंत्रित करती थी। इससे उन्हें अत्यधिक खुशी मिलती थी। आत्मसंतोष प्राप्त होता था। आत्मिक शान्ति मिलती थी।

इसी प्रकार जो -रसिकिन एक ब्रिटेन के राजनैतिक को जब उत्तराधिकार में रकम मिली तो उसने उस धन को अच्छे कार्यों में लगाया। जो छात्र-छात्राएँ धनाभाव के कारण अपनी पढ़ाई जारी रखने की स्थिति में नहीं थे, उसने सहायता करके उनकी पढ़ाई जारी रखने में मदद की। कामकाजी महिलाओं व पुरुषों के लिए उसने आदर्श आवास की व्यवस्था की। लंदन के बाहर की सुखी पड़ी भूमि को उसने खेती योग्य बनाने की दिशा में कार्य करवाया, फिर ऐसे लोगों को उसने उस भूमि में काम करके ऊपर उठने का अवसर दिया जो स्वयं अपनी दुर्बलताओं के कारण या समाज के क्रुर व्यवहार के कारण पतित हो चुके थे।

निर्धन कलाकारों की सहायता के लिए वह सदा तत्पर रहता था, इस प्रकार उसने नवयुवकों में कला के प्रति आकर्षण और रूचि पैदा की। कई कलाकारों की कृतियाँ खरीदकर उसने उन्हें स्कूलों में टंगवा दिया। कहने का तात्पर्य यह है कि उसने विरासत में मिले आधे से अधिक धन को इसी प्रकार के कार्यों पर खर्च कर दिया, किन्तु जिस समस्या को सुलझाने का बीड़ा उसने उठाया था, वह बढ़ती जा रही थी- गरीब विद्यार्थियों का तांता लगा ही रहता। कामकाजी व्यक्तियों की समस्याएँ कम अवश्य हुई थी, किन्तु पूरी तरह समाप्त नहीं हुई थी। अतः उसने अपने लिए केवल उतनी ही सम्पत्ति रखी, जिससे उसे खर्चे लायक पन्द्रह सौ पौण्ड सालाना प्राप्त होते रहे। बाकी सम्पत्ति बेचकर उसने उसे ऐसे कार्यों में लगा दिया जिससे दूसरों को भला हो। आप समझ सकते हैं कि यह कार्य सैकड़ों यज्ञों से भी अधिक पुण्य का था। इससे उसे कितनी आत्मिक शान्ति मिली होगी। कितनी दुआएँ उसके लिए लोगों ने मांगी होगी। इस प्रकार उसने इस लोक में यश पाया इसीलिए पर उपकार से बड़ा कोई कार्य नहीं। इसलिए प्रसन्नता से जीवन बिताना है तो दूसरों के दुःख बाटो, **खुद जियो और को भी जीने दो यही तो है जिन्दगी का रास्ता।**

हमेशा कार्यशील रहो, आलस्य को अपने जीवन में मत आने दो। ऐसी आदत डालो कि कभी खाली बैठने का समय ना हो आपका मन और मस्तिष्क कुछ करने की ओर प्रेरित करे। किसी ने खूब लिखा है?

जीवन चलने का नाम, चलते रहो सुबह शाम
कि रस्ता कट जायेगा मित्रों के बादल छट जायेगा मित्रों।

आओ प्रण करें कि जीवन में स्वयं की उन्नति करेंगे लेकिन औरों को भी साथ लेकर उठेंगे।

अजय टंकारावाला

'हवन क्यों करें, करें या न करें?'

❑ मनमोहन कुमार आर्य

हवन क्या है? हवन एक कर्मकाण्ड है जिसमें एक हवन कुण्ड, यज्ञ की समिधायें, एक पात्र में घृत, उसमें एक चम्मच या चमसा, आचमन के लिए जल व उनमें चम्मच, यजमानों व याज्ञिकों की संख्या के अनुसार प्लेटों में हवन सामग्री व याज्ञिकों के बैठने के लिए आसन आदि का प्रबन्ध किया जाता है। यज्ञ में हवन के मन्त्र बोले जाते हैं जिनकी भाषा वैदिक संस्कृत है। मन्त्रों को बोलने का प्रयोजन यह है कि इससे वेदों में निहित ईश्वरीय ज्ञान की रक्षा व इनके अर्थों को जानकर इनसे होने वाले लाभ विदित होते हैं व इनसे भी स्तुति-प्रार्थना-उपासना हो जाती है जो अन्यथा नहीं हो सकती। यह भी यहां स्पष्ट कर दें कि थोड़े से परिश्रम व कुछ बार आवृत्ति करने पर स्मरण हो जाते हैं। हमने देखा है कि जिन परिवारों में यज्ञ होता है वहां के छोटे-छोटे बच्चों, जिनकों ठीक से भाषा का ज्ञान नहीं होता, अपनी तोतली भाषा में ही मन्त्रोच्चार करते हैं तो वह दर्शक को बहुत प्रिय व अच्छा लगता है। जो व्यक्ति, बूढ़ा, युवक, विद्यार्थी व बच्चा, विश्व की श्रेष्ठतम् धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिए इतना भी नहीं कर सकता, अपितु हवन का विरोध करता है, उससे क्या आशा या अपेक्षा की जा सकती है? वह उस ईश्वर के प्रति व देश समाज के प्रति कृतघ्न होता है, जिसने यह संसार बनाया व उसे जन्म व सुखों की नाना प्रकार की सामग्री से समृद्ध किया है।

हवन वह पद्धति है जिससे गृह व निवास स्थान की दूषित व रोगोत्पादक वायु को बाहर निकाला जाता है, बाहर की शुद्ध वायु! को घर में प्रवेश कराया जाता है, रोग न हों और यदि किसी सदस्य को है तो उसका निवारण या उपचार होता है। इसके अतिरिक्त वैद्य या डाक्टर के परामर्श से ओषधि का सेवन भी अवश्य करना चाहिये। हवन अपना कार्य करेगा और बचा हुआ कार्य ओषधि के सेवन से होगा। यज्ञ में जो पदार्थ आहुत किये जाते हैं, वह अग्नि से सूक्ष्म हो जाते हैं। वह सारे घर में फैल जाते हैं। सूक्ष्म पदार्थों का हमारे स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव पड़ता है। हानिकारक रोग उत्पन्न करने वाले वायु में विद्यमान कीटाणुओं व बैक्टिरियाओं का नाश होता है।

गीता के अनुसार यज्ञ करने से बादल बनते हैं, बादल से वर्षा होती है, उस वर्षा के जल में हवन में होम किये गये पदार्थ सूक्ष्म होने के कारण घुले-मिले होते हैं, हवन में आहुत सूक्ष्म पदार्थों व वर्षा के जल से हमारे खेतों में यह जल उत्तम खाद का काम करता है। पुरूष व प्राणी इस प्रकार यज्ञों से प्रभावित उत्पन्न हुए अन्न का भक्षण करते हैं, तो इस अन्न से शरीर की विभिन्न इन्द्रियां व सभी अंग स्वस्थ व बलवान होकर पौरूष शक्ति उन्नत होती है। ऐसे स्त्री-पुरूषों से जो सन्तानें उत्पन्न होतीं हैं, वह श्रेष्ठ होती हैं। हवन में वेद मन्त्र का बोलना आवश्यक है। पूर्ण वर्णित लाभ से अतिरिक्त इसका अन्य लाभ यह है कि बोले जाने वाले मन्त्रों के अर्थों को जानकर यज्ञ में रूचि व प्रवृत्ति बढ़ती है। आजकल यज्ञों में बोले जाने सभी मन्त्र व उनके अर्थ लघु पुस्तिकाओं में उपलब्ध हो जाते हैं। थोड़ा सा प्रयास मात्र करना है। इससे सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर प्रदत्त व सृष्टि इतिहास में सर्वश्रेष्ठ वैदिक ज्ञान व विचारों वाले इन वेद मन्त्रों की रक्षा होती है जो कि मनुष्यमात्र का प्रथम कर्तव्य है। इसका कारण संसार में ज्ञान से बढ़कर कुछ नहीं है तथा यह मन्त्र श्रेष्ठ व अपौरूषेय ज्ञान का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं जिनकी रक्षा आवश्यक है।

यहां ध्यान देने योग्य बात है कि सृष्टि व वेद की उत्पत्ति को 1,96,08,53,114 वर्ष हो चुके हैं। हमारे पूर्वजों ने प्राणपण से वेदों की इतनी लम्बी अवधि तक रक्षा की है। यह संसार के इतिहास में अपूर्व व आश्चर्यजनक है। हम तो इसे संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य कहेंगे। आज वेदों की रक्षा करना पहले से आसान हैं। पुस्तकों द्वारा, सीडी/वीसीडी आदि के द्वारा मन्त्रों को बोल कर व स्मरण कर इनकी रक्षा होती है। जो लोग वेदों के सन्ध्या व हवन के मन्त्रों को बोलना अनावश्यक समझते हैं उनसे हम यह कहना चाहते हैं कि जब छोटे-छोटे कार्यों में गृहस्थी अपना लम्बा समय व बड़ी धनराशि व्यय कर सकते हैं तो ईश्वर, जिसने हमारे लिए सृष्टि बनाई, हमें यह मानव शरीर दिया व हमारे माता-पिता, पुत्र व पुत्रियां आदि सम्बन्धी हमें दिये तो क्या उसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकाशित करने के लिए सन्ध्या व हवन नहीं करना चाहिये? हम समझते हैं कि सभी बुद्धिमान पाठक कहेगें कि अवश्य करना चाहिये। अत: जो बन्धु न करते हों उनसे हमारा अनुरोध है कि आज से ही हवन करना आरम्भ कर दें और इसके दृश्य व अदृश्य लाभों से वंचित न हों।

अब से होने वाले लाभ की कुछ चर्चा और कर लेते हैं। सन्ध्या से तो ईश्वर से निकटता होती है। इससे बुरे गुण-कर्म-स्वभाव का छूटना व श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव का बनना होता है। याज्ञिक परिवार के लोगों का स्वास्थ्यय अच्छा होना व दीर्घायु होने से अनेकानेक लाभ होते हैं। ईश्वर ने यज्ञ करने वालों का देवता कहा है। हम यज्ञ करते हैं तो हम ईश्वर की दृष्टि में देवता होते हैं। यह पृथिवी देवों द्वारा यजन किये जाने से ईश्वर इसके लिए वेदमन्त्र में ''देवयजनि'' शब्द का प्रयोग करते हैं। यदि व्यक्ति यज्ञ नहीं करता तो वह ईश्वर के नियमों को तोड़कर अपराधी होने से ईश्वर द्वारा उसे मनुष्य जन्म दिये जाने को असफल सिद्ध करता है व दण्ड का भागी होता है। इसे इस प्रकार से समझ लें कि कोई व्यक्ति सरकारी या निजी क्षेत्र में नौकरी करता है। वहां उसे 10 बजे आने के लिए कहा जाये और वह देर से पहुंचे या न पहुंचे तो वह दण्ड स्वरूप नौकरी से निकाल दिया जाता है, इसी प्रकार से यज्ञ की ईश्वराज्ञा वा वेदाज्ञा का उल्लंघन करने या न मानने से वह ईश्वरीय दण्ड का भागी हो जाता है।

हमने निष्पक्ष भाव से मनुष्य-देश-समाज के हित को सामने रखकर संक्षेप में यज्ञ व हवन के विषय में लिखा है। आशा है कि पाठक इन पर विचार करगें और इन्हें सत्य पायेंगे। हम उनसे अपेक्षा करते हैं कि वह भी सन्ध्या व हवन को अपनायेंगे और दूसरों को भी इसके लिए प्रोत्साहित करेंगे और ऐसा करके पुण्य के भागी बनें। हम यह भी कहना चाहेंगे यदि किसी यज्ञ प्रेमी के पास यज्ञ करने के लिए घृत, सामग्री, स्थान आदि की समस्या हो तो वह यज्ञ को छोड़े नहीं, अपितु! अपने मन्त्रों को बोल या मन से उनका पाठ कर हवन को सम्पन्न करें। हम समझते हैं कि यदि दैनिक यज्ञ में स्वस्तिवाचन व शान्तिकरण को भी सम्मिलित कर सकें तो इससे अधिक लाभ होने की सम्भावना है।

- 196 चपुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, फोन: 09412985121

संसार में उस मनुष्य का सत्कार होता है, जो विद्वानों के उत्तम वचनों को सुनकर सत्य और असत्य का ठीकठीक निर्णय कर असत्य को छोड़कर सत्य को ग्रहण करके यशस्वी होकर पुण्य को प्राप्त होता है। **- स्वामी दयानन्द**

इन्द्र व उसका सोमपान

❑ महात्मा चैतन्यमुनि

इन्द्र के सम्बन्ध में जन-साधारण में अनेक प्रकार की काल्पनिक, निराधार, अवैज्ञानिक एवं हास्यास्पद कथाएं प्रचलित हैं। भागवत पुराण के छट्ठे स्कन्ध के सातवें अध्याय में इस सम्बन्ध में लिखा है कि-'इन्द्र को त्रिलोकी का ऐश्वर्य पाकर अभिमान हो गया जिसके कारण वह धर्म मर्यादा एवं सदाचार का उल्लंघन करने लगा। एक समय की बात है वह भरी सभा में अपनी पत्नी शची के साथ अपने ऊँचे सिंहासन पर बैठा हुआ था और उन्चास मरूतगण, आठ वसु, ग्यारह रूद्र आदित्य, ऋषिगण, विश्वदेवा, साध्यगण और दोनों अश्विनि कुमार उनकी सेवा में उपस्थित थे। सिद्ध, चारण, गन्धर्व, ब्रह्मवादी, मुनिगण, विद्याधर अप्सराएं, किन्नर पक्षी और नाग उसकी सेवा और स्तुति कर रहे थे... सब ओर ललित स्वर में देवराज इन्द्र की कीर्ति का गान हो रहा था। उपर की ओर चन्द्रमण्डल के समान सुन्दर श्वेत छत्र शोभायमान था। चंवर एवं पंखे आदि महाराजोचित सामग्रियां यथा स्थान सुसज्जित हो सुशोभित हो रहे थे। इस प्रकार पुराणों में इन्द्र को देवताओं का राजा माना गया है है जो सोने का मुकुट पहनता है, उसके हाथ में बज्र रहता है, वह ऐरावत नामक श्वेत हाथी की सवारी करता है, मेनका व रंभा आदि अप्सराएं उसके दरवार में नृत्य करती है, वह साधनारत ऋषि-मुनियों की तपस्या भंग करने के लिए अप्सराओं को भेजता है क्योंकि उसे सदा यह डर बना रहता है कि कोई ऋषि मेरे पद को प्राप्त न कर सके। वह स्वयं गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या का चरित्रभ्रष्ट करने के लिए गया था... पुराणों का इन्द्र युद्ध भी करता है, उसने दधीचि की हड्डियों से शस्त्र बनाकर वृत्रासुर का बध किया था.... ब्रह्मवैवर्त्त पुराण में लिखा है कि इन्द्र देवों का राजा था जिसने गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या के साथ जार कर्म किया, गौतम ऋषि ने उसे शाप दिया कि तू सहस्त्र भग वाला हो जा, अहिल्या को शाप दिया कि तू पत्थर हो जा, श्रीरामजी की पादरज से वह शापमुक्त होकर पुनः स्त्री बनी थी। एक अन्य कथा पुराणों में इस प्रकार है कि त्वष्टा के पुत्र वृत्रासुर ने देवों के राजा इन्द्र को निगल लिया जिससे देवता भयभीत होकर विष्णु के पास गए, विष्णु ने उसके मारने का उपाय यह बताया कि समुद्र के झाग को उठाकर उस पर मारना उससे वह मर जाएगा। इसी प्रकार देवासुर संग्राम की कथा भी है। वृत्रासुर दैत्यों का राजा था जिसके साथ बहुत बड़ी दैत्यों की सेना थी तथा उसका पुरोहित शुक्राचार्य था। इसी प्रकार देवताओं का राजा इन्द्र था तथा उसके पास भी सेना थी और उसका पुरोहित वृहस्पति था... राक्षसों को मारने के लिए दधीचि ऋषिजी ने अपनी हड्डियां प्रदान की जिनके शस्त्र से इन्द्र ने वृत्रासुर का बध किया.....।

वास्तविकता यह है कि इन्द्र के नाम पर पौराणिक काल में इस प्रकार की कल्पनाएं इसलिए गढ़ ली गई क्योंकि वेद में आए इन्द्र, वृत्र, गौतम, अहिल्या, दधीचि, अप्सरा, रंभा, उर्वशी आदि शब्दों को सही-सही परिप्रेक्ष्य में नहीं समझा गया क्योंकि सायण एवं महीधर आदि तथा पाश्चात्य विद्वानों ने वेद मन्त्रों के अध्यात्म, अधिदैवत और अधियज्ञ आदि अर्थ करने की परम्परा का निर्वहन नहीं किया। पुराण साहित्य तो वैसे भी अनेक प्रकार की अविश्नीय, अनर्गल, काल्पनिक, सृष्टिनियम के विरूद्ध बातों तथा हमारी गरिमामयी प्राचीनतम वैदिक-संस्कृति की ज्ञान-गरिमा रूपी विरासत को नीचा दिखाने की बातों से भरा पड़ा है। संभवतः हमारी गरिमापूर्ण संस्कृति एवं समुज्जवल इतिहास को पूर्ण से अविश्वसनीय, अवैज्ञानिक, अश्लील और हेय दिखाने के लिए इस प्रकार के साहित्य की रचना विधिवत करवाई गई होगी और इसका कुपरिणाम भी हम आज देख रहे हैं.... इस प्रकार के निराधार ग्रन्थों को विश्वसनीयता की श्रेणी में लाने के लिए इनके रचयिता के रूप में महर्षि वेदव्यासजी का नाम लिया जाता है मगर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अभिमत है कि-'जो अठारह पुराणों के कर्ता व्यासजी होते, तो उनमें इतने गपोड़े न होते। क्योंकि शारीरिक सूत्र, योगशास्त्र के भाष्यादि व्यास उक्त ग्रन्थों के देखने से विदित होता है कि व्यासजी बड़े विद्वान सत्यवादी धार्मिक योगी थे। वे ऐसी मिथ्या कथा कभी न लिखते और इससे यह सिद्ध होता है कि जिन सम्प्रदायी परस्पर विरोधी लोगों ने भागवतादि नवीन कपोलकल्पित ग्रन्थ बनाए है, उनमें व्यासजी के गुणों का लेश भी नहीं था और वेदशास्त्रविरूद्ध असत्यवाद लिखना व्यास सदृश विद्वानों का काम नहीं। किन्तु यह काम (वेद-शास्त्र) विरोधी स्वार्थी अविद्वान लोगों का है।' अपने ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में महर्षि दयानन्दजी ने प्रमाण भी दिया है कि-'यह भागवत बोबदेव का बनाया है, जिसके भाई जयदेव ने 'गीता गोविन्द' बनाया है। देखो उसने यह श्लोक अपने बनाए 'हिमाद्रि' नामक ग्रन्थ में लिखे है कि 'श्रीमदभागवतपुराण मैंने बनाया है।' उस लेख के तीन पत्र हमारे पास थे। उनमें से एक पत्र खो गया है। उस पत्र में श्लोकों का जो आशय था, उस आशय के हमने दो श्लोक बना के नीचे लिखे है। जिसको देखना **हो**, वह 'हिमाद्रि' ग्रन्थ में देख लेवें-

'हिमाद्रेः सचिवस्यार्थे सूचना क्रियतेऽधुना।
स्कन्धाऽध्यायकथानां च यत्प्रमाणं समासतः॥
श्रीमद्भागवतं नाम पुराणं च मयेरितम्।
विदुषा बोबदेवेन श्रीकृष्णस्य यशोन्वितम्॥'

इसी प्रकार के नष्टपत्र में श्लोक थे। अर्थात् राजा के सचिव हिमाद्रि ने 'बोबदेव' पण्डित से कहा कि- 'मुझको तुम्हारे बनाये श्रीमद्भागवत के सम्पूर्ण सुनने का अवकाश नहीं है। इसलिए तुम संक्षेप से श्लोकबद्ध सूचीपत्र बनाओ। जिसको देखके मैं श्रीमद्भागवत की कथा को संक्षेप से जान लूँ। सो नीचे लिखा हुआ सूचीपत्र उस 'बोबदेव' ने बनाया। उन में से उस नष्ट पत्र में 10 श्लोक खो गए हैं। ग्यारहवें श्लोक से लिखते है। ये नीचे लिखे श्लोक सब बोबदेव ने बनाये हैं। वे-

बोधयन्तीति हि प्राहुः..... प्रोक्ता द्रौणिजयादयः॥ (इति प्रथम स्कन्ध) इत्यादि बारह स्कन्धों का सूचीपत्र इसी प्रकार 'बोबदेव' पण्डित ने बनाकर 'हिमाद्रि' सचिव को दिया। जो विस्तार देखना चाद्रि, वह बोबदेव के बनाये हिमादि ग्रन्थ में देख लेवें। इसी प्रकार अन्य पुराणों की लीला समझनी। परन्तु उन्नीस बीस इक्कीस एक दूसरे से बढ़कर है, 'पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक जी अपनी टिप्पणी में लिखते हैं-'द्र-नीलकण्ड कृत देवीभागवत की टीका का उपोद्घात-'विष्णु-भागवतं बोपदेवकृतमिति वदन्ति। 'शाहजहां के समकालिक कवीन्द्राचार्य के पुस्तकालय के सूचीपत्र (बड़ोदा से छपा) में भागवत को बोपदेवकृत लिखा है।'

इन्द्र के सम्बन्ध में विशद् चर्चा हम आगे करने का प्रयास करेंगे मगर यहां पर केवल इन पौराणिक कथाओं के वैदिक स्वरूप पर थोड़ा सा विचार कर लेते हैं। वेद में इन्द्र सूर्य का भी नाम है तथा वृत्र बादलों का नाम है। ऋग्वेद के एक मन्त्र (1-32-10) पर विचार करते हुए

यास्क लिखते हैं-तत्रको वृत्रो मेघ इति नैरूक्ता अपां च ज्योतिषश्च मिश्रीभाव कर्मणा वर्ष कर्म जायते। अर्थात् वृत्र नाम मेघ का है। सूर्य की किरणों तथा बादल के जल के मेल से वर्षा होती है। ऋषेर्दृष्टार्थस्य प्रीतिर्भवत्याख्यान संयुक्ता। ऋषि अर्थ को समझने के लिए आलंकारिक आख्यानों का सहारा लेते है। वेद में इन्द्र सम्बन्धी आलंकारिक वर्णनों को अपनी अज्ञता के कारण पुराणों में काल्पनिक और विकृत रूप में प्रस्तुत किया गया है। पाश्चात्य विद्वानों तथा आगे आने वाले संस्कृत के कवियों ने भी इसी दूषित पद्धति का निर्वहन करते हुए न केवल अर्थ का अनर्थ किया बल्कि वेद में इतिहास आदि भी सिद्ध करने का कुत्सित प्रयास किया है। उपरोक्त वेद मन्त्र में इन्द्र सूर्य को कहा गया है जो सभी नक्षत्रों का राजा है, इसलिए इसे देवराज इन्द्र कहा गया है। सूर्य रूपी इन्द्र स्वर्गलोग अर्थात् द्युलोक में रहता है। इसकी किरणें ही बज्र है। यह सूर्य बादलों से उपर रहता है तथा ये बादल ही उसका ऐरावत नामक हाथी है। सूर्य की किरणें अपसरण अर्थात् गति करने के कारण अप्सराएं कहलाती हैं, जो नृत्य करती हुई दिखाई देती हैं। 'अप्सु सरन्ति ताः अप्सराः' जल में प्रविष्ठ होती हैं इसलिए किरणें अप्सराएं है। लहरों के साथ किरणें भी नृत्य करती हैं यही इनका नाचना है। इस सूर्य अर्थात् इन्द्र का युद्ध बादलों अर्थात् वृत्र से होता है। इन्द्र अपने किरणों रूपी बज्र से वृत्रासुर को मारते है जिससे वर्षा होती है और बादल मर जाते है। सूर्य की किरणों का नाम रंभा, उर्वशी आदि भी है। जब अन्तरिक्ष में सूर्य की किरणें फैली है। तब सातों ऋषियों का (सात तारों का) तप समाप्त हो जाता है अर्थात् वे निस्तेज हो जाते हैं, यही अप्सराओं (किरणों) के द्वारा ऋषियों का तप भंग करना कहा गया है.....

ऋग्वेद के मन्त्र (1-84-13) का भाष्य करते हुए स्कन्द स्वामी ने एक कथा गढ़ ली कि देवताओं ने एक बार ब्रह्मा से कालकंज नाम के असुर को मारने का उपाय पूछा तो ब्रह्मा ने उन्हें दध्यड् ऋषि के पास उपाय जानने के लिए भेजा। देवता उनके पास गए तो ऋषि ने उनके भाव को जानकर अपने प्राण त्याग दिए। उसकी हड्डियों से इन्द्र ने उस असुर का वध किया..... कालान्तर में यही कथा दधीचि ऋषि के नाम से प्रचलित हो गई कि दधीचि की हड्डियों के बज्र से इन्द्र ने वृत्रासुर का बध किया। यह कथा इसलिए गढ़ ली गई। क्योंकि वेद मन्त्र में आए शब्दों के आलंकारिक वर्णन को सही-सही परिप्रेक्ष्य में नहीं समझा गया। मन्त्र में आए इन्द्र, दधीचि, अस्थभिः तथा वृत्र को लेकर एक बहुत ही रोचक कथा कल्पित कर ली जबकि मन्त्र का सीधा सा अर्थ है-(अप्रतिष्कुतः) स्थिर (इन्द्रः) इन्द्र ने (दधीचः) अपनी तेजरूप की (अस्थभिः) अस्थिर किरणों से (वृत्राणि) बादलों को (नवतीर्नव) निन्यार्नव) निन्यानवे बार (जघान) मारा। भावार्थ रूप में इसे हम इस प्रकार समझ सकते है कि सूर्य अपनी धुरी पर स्थित है। सूर्य की किरणों की उष्मा से बादल बरसते है। यह प्रक्रिया वर्षा के महीनों में अर्थात् आषाढ़, श्रावण और भादों में चलती रहती है। बार-बार बादल उठते रहते है और बार-बार सूर्य उन्हें समाप्त करके वर्षा करता है। मन्त्र का आध्यात्मिक अर्थ इस प्रकार है-(इन्द्रः) जितेन्द्रिय पुरुष (अप्रतिष्कुतः) प्रतिकुल शब्द से रहित हुआ-हुआ, प्रतिद्वन्द्वी से रहित हुआ-हुआ (दधीचः) ध्यानी पुरुष की-(ध्यानं प्रत्यक्तः। निरु012-33) (अस्थिभिः) (असु क्षेपणे) विषयों को दूर फैकने की शक्तियों से (वृत्राणि) ज्ञान की आवरणभूत वासनाओं को (नवतीः नव) निन्यावे बार (जघान) नष्ट करता है और इस प्रकार शतवर्षो को वासना-शून्य बनाता है। मन्त्रार्थ का भाव स्पष्ट है कि ध्यान-परायण व्यक्ति ही दध्यड् व दधीचि है। विषयों को दूर फेकने की वृत्तियां ही हडिडयां है। वासना ही वृ.1 है। निन्यानवे बार नाश का अभिप्राय यही है कि हम सदा वासना के आक्रमण को अपने से दूर रखने के लिए सजग रहते हैं।

इसी प्रकार इन्द्र द्वारा गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या से व्यभिचार करना, गौतमजी का इन्द्र को तथा अहिल्या को शाप देना, श्रीरामजी के चरण स्पर्श से अहिल्या का उद्धार होना आदि भी कथा कल्पित कर ली गई है जबकि वास्तविकता यह है कि-गच्छतीति गोः अतिशयेन गच्छतीति गौतमः चन्द्रः अर्थात् जो शीघ्र चलता है उस चन्द्र का नाम गौतम है। अहर्दिनं लीयतेऽस्यां तस्माद्रात्रि अहिल्याः अर्थात् दिन जिसमें लीन हो जाता है उस रात्रि का नाम अहिल्या है। 'जृष वयो हानौ' इस धातु से जार शब्द बना है, अर्थात् नष्ट करने वाला। इस परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो यह जो अश्लील एवं काल्पनिक कथा बना दी गई है, वह तो वास्तव में सूर्यादय और सूर्यास्त का बहुत ही मनोरम एवं हृदयग्राही आलंकारिक वर्णन है। जब इन्द्र (सूर्य) उदय होता है तब चन्द्रमा (गौतम) दूसरे छोर पर समुद्र की तरफ चला जाता है उस समय अपनी किरणों (चरणें) के स्पर्श से जाते हुए भी अहिल्या (रात्रि) को पुनः जीवित कर देता है।

वास्तव में इन्द्र शब्द परमैश्वर्यार्थक 'इदि' धातु से उणादि 'रन' प्रत्यय करके सिद्ध होता है। 'इन्द्र' के निरूक्त में प्रदर्शित कई निवर्चनों में से एक यह है-इन्दन् शत्रूणां दारयिता (निरूक्त 10-9)। इसके अनुसार परमैश्वर्यार्थक 'इदि' धातु तथा विदारणार्थक 'दृ' धातु के योग से इन्द्र शब्द बना है। जो परमैश्वर्यवान् होता हुआ शत्रुओं का विदारण करता है, वह 'इन्द्र' है। महर्षि दयानन्द जी ने इन्द्र के परमेश्वर, जीवात्मा, विद्वान पुरुष, वीर, राजा, प्राण, वायु, सेनानी, शूरवीर योद्धा, विद्युत, यज्ञ, सूर्यलोक, किसान एवं वैद्य आदि अर्थ किए है।

आधिदैवित क्षेत्र में सूर्य इन्द्र है और वृत्र है-अन्धकार या बादल आदि। अधिभूत क्षेत्र में राजा या सेनापति इन्द्र और वृत्र हैं-देश पर आक्रमण करने वाले शत्रु आदि और आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्मा इन्द्र है और वृत्र है-अज्ञानान्धकार एवं पापकर्म आदि। इन समस्त दृष्टिकोणों से इन्द्र द्वारा सोम-पान करने की संगती लगाई जानी अपेक्षित है तभी इन्द्र तथा उसके द्वारा किए गए सोमपान के रहस्य को हम भली प्रकार से समझ सकते हैं।

इस सम्बन्ध में श्री वासुदेवशरण अग्रवाल जी अपने 'उरु-ज्योति' ग्रन्थ में लिखते हैं-'इन्द्र सोम पान करता है। वह सोम-सुत है। यज्ञ का देवता है। यज्ञों में सोम पीता है। शरीरस्थ विधानों की पूर्ति एक यज्ञ है। श्रीकृष्ण ने कहा है -अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर। (गी.8-1)। इस देह में व्याप्त आत्मप्रक्रियाएं ही अधियज्ञ है। देहस्थ समस्त कर्मो के द्वारा आत्मा की ही उपासना की जाती है। आत्मा के लिए सब कर्म होते हैं। इस यज्ञ में सोम क्या है और उसका भाग इन्द्र को कैसे पहुंचता है? वैदिक भाषा में ब्रह्माण्ड या मस्तिष्क स्वर्ग है। इन्द्र की इन्द्रिय-शक्ति का निवास ब्रह्माण्ड (Cerebrun) में ही रहता है। यही सब इन्द्रियों के केन्द्र है, जहां से इन्द्र प्राणों का संचालन करता है। बाह्य संस्पर्शो के आदान-प्रदान की शक्तियां (Sensory and Motor Functions) प्राण हैं। उनका नियन्ता इन्द्र, ब्रह्माण्ड या स्वर्ग का अधिपति है। वह इन्द्र सोम पीकर अमरत्व लाभ करता है। इस प्रकार इन्द्र के सोम-पान में भारतीय ब्रह्मचर्य-शास्त्र का गूढ़ तत्व समाया हुआ है। शरीर की शक्ति को शरीर में ही पचा लेने के रहस्य का नाम सोम-पान है। **(शेष पृष्ठ 22 पर)**

सुख-दुःख का जनक कौन?

□ कन्हैयालाल लोढ़ा

प्राय: सभी की यह मान्यता है कि हमारे सुख-दु:ख का कारण वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति आदि अन्य घटक हैं। परन्तु जब व्यक्ति अपने सुख-दु:ख का कारण अपने को नहीं मानकर किसी अन्य वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति व अवस्था को मान लेता है तो उसका सुख-दु:ख 'पर' अर्थात् अन्य पर आश्रित हो जाता है, वह पराश्रित हो जाता है। पराश्रित होना पराधीन होना है। पराधीनता अपने आप में बड़ा दु:ख है। पराधीनता किसी भी प्राणी को किसी भी काल में अभीष्ट नहीं है। अत: पराधीनता के दु:ख से बचना है तो सुख-दु:ख का कारण अन्य को मानना त्यागना ही होगा।

जब प्राणी अपने दु:ख का कारण दूसरे को मान लेता है तो उसका भयंकर परिणाम यह होता है कि जिस दु:ख को सदा के लिए मिटा सकता है, उसे मिटाने में भी अपने को पराधीन मान लेता है। पराधीन होने पर दु:ख का दूर होना तो दूर, उत्तरोत्तर बढ़ता ही जाता है।

यह मानना कि अपने सुख-दु:ख का कारण अन्य है अर्थात् वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति, अवस्था आदि है, युक्तियुक्त नहीं है। कारण कि यदि हमें अन्य कोई दु:ख दे सकता है तो दु:ख मिटाने में हम पराधीन हो गये, फिर दु:ख मिट ही नहीं सकता। अत: दु:ख अन्य कोई दे ही नहीं सकता, क्योंकि जगत् स्वयं सतत परिवर्तनशील है, पर प्रकाश्य है और जगत् के पदार्थों में दु:ख है ही नहीं, परमात्मा में दु:ख है ही नहीं। अत: जगत् और परमात्मा भी दु:ख नहीं दे सकते। जिसके पास जो वस्तु है ही नहीं, वह उसे कैसे दे सकता है। अत: यह मानना पड़ता है कि अपने दु:ख का कारण अन्य कोई भी नहीं है। उदाहरणार्थ-'क' व्यक्ति ने किसी को गाली दी कि 'तुम गधे हो' यह गाली वहाँ खड़े सैकड़ों व्यक्तियों ने सुनी, परन्तु उन सैकड़ों व्यक्तियों को गाली से दु:ख नहीं होगा, दु:ख केवल उसी व्यक्ति को होगा जो गाली को सुनकर यह मानेगा कि इसने 'गधा' कहकर मेरा अपमान किया है। जिसने यह मान लिया कि इसके कहने से मैं गधा नहीं हो गया, मेरा कुछ भी नहीं बिगड़ा उसे दु:ख नहीं होगा। यदि यही वाक्य अंग्रेजी में कहा- You are a donkey और सुनने वाला अंग्रेजी नहीं जानता है तो उसे दु:ख नहीं होगा अथवा वही वाक्य 'तुम गधे हो' पिता ने अपने शिशु को कहा तो वह बुरा नहीं मानेगा, प्रत्युत मुस्करायेगा। विवाहोत्सव पर ससुराल में स्त्रियाँ वर व वर के परिवारवालों को गीतों में गालियाँ देती हैं, परन्तु उन गालियों को कोई बुरा नहीं मानता। यदि गाली दु:ख देती तो गाली सुनने वाले सबको समान रूप से दु:ख होता, सब काल में होता, सब परिस्थितियों में होता। परन्तु ऐसा नहीं देखा जाता। इससे यह प्रमाणित होता है कि गाली देने की घटना दु:ख का कारण नहीं है।

दूसरा उदाहरण लें। मान लें कि मेरे पास पचास हजार रूपये हैं, उन रूपयों को किसी ने मेरे से छीन लिया तो मुझे घोर दु:ख होगा। यदि ये रूपये किसी बैंक के हैं जिन्हें मैं उसी बैंक की किसी शाखा में या अन्य बैंक में बैंक कर्मचारी के रूप में जमा कराने जा रहा हूँ फिर वे रूपये मेरे से छिन जावें तो मुझे पहली बार छिनने से जितना दु:ख हुआ दूसरी बार उतना दु:ख नहीं होगा। यदि मैंने अपने पचास हजार रूपये देकर किसी जौहरी से एक नगीना खरीद लिया और उस जौहरी से मेरे सामने ही पचास हजार रूपये छीन लिए गये तो रूपये छिनने का अब मुझे दु:ख नहीं होगा। यदि रूपये छिनने की घटना से 'दु:ख' होने का संबंध होता तो तीनों ही अवस्थाओं में समान दु:ख होना चाहिए था, परन्तु ऐसा नहीं होता। होता यह है कि जिस वस्तु से हमने जितना गहरा संबंध जोड़ रखा है, उतना ही गहरा दु:ख उसके वियोग से होता है। यह दु:ख घटना के कारण नहीं होता है, प्रत्युत घटना के प्रति प्रतिक्रिया करने से होता है। यही कारण है कि एक घटना को हजारों लाखों लोग प्रतिदिन रेडियो, टेलीविजन, समाचार-पत्र आदि से जानते हैं, देखते हैं, उन सब पर उस घटना का सुख-दु:ख रूप प्रभाव भिन्न-भिन्न रूप में पड़ता है, एकसा प्रभाव नहीं पड़ता है। यदि घटना या परिस्थिति ही दु:ख-सुख का कारण होती तो सबको समान सुख-दु:ख होता, परन्तु ऐसा नहीं होता है। इससे सिद्ध होता है कि परिस्थिति या घटना सुख-दु:ख का कारण नहीं है।

दूसरा उदाहरण लें-मान लें कि मेरे पास पचास हजार रूपये हैं, उन रूपयों को किसी ने मेरे से छीन लिया तो मुझे घोर दु:ख होगा। यदि ये रूपये किसी बैंक के हैं जिन्हें मैं उसी बैंक की किसी शाखा में या अन्य बैंक में बैंक कर्मचारी के रूप में जमा कराने जा रहा हूँ फिर वे रूपये मेरे से छिन जावें तो मुझे पहली बार छिनने से जितना दु:ख हुआ दूसरी बार उतना दु:ख नहीं होगा। यदि मैंने अपने पचास हजार रूपये देकर किसी जौहरी से एक नगीना खरीद लिया और उस जौहरी से मेरे सामने ही पचास हजार रूपये छीन लिये गये तो रूपये छिनने का अब मुझे दु:ख नहीं होगा। यदि रूपये छिनने की घटना से 'दु:ख' होने का संबंध होता तो तीनों ही अवस्थाओं में समान दु:ख होना चाहिए था, परन्तु ऐसा नहीं होता। होता यह है कि जिस वस्तु से हमने जितना गहरा संबंध जोड़ रखा है, उतना ही गहरा दु:ख उसके वियोग से होता है। यह दु:ख घटना के कारण नहीं होता है, प्रत्युत घटना के प्रति प्रतिक्रिया करने से होता है। यही कारण है कि एक घटना को हजारों-लाखों लोग प्रतिदिन रेडिया, टेलीविजन, समाचार-पत्र आदि से जानते हैं, देखते हैं, उन सब पर उस घटना का सुख-दु:ख रूप प्रभाव भिन्न-भिन्न रूप में पड़ता है, एकसा प्रभाव नहीं पड़ता है। यदि घटना या परिस्थिति ही दु:ख-सुख का कारण होती तो सबको समान सुख-दु:ख होता, परन्तु ऐसा नहीं होता है। इससे सिद्ध होता है कि परिस्थिति या घटना सुख-दु:ख का कारण नहीं है।

हम एक उदाहरण और लें। किसी स्त्री के प्रियतम पति की किसी दुर्घटना में, विदेश में मृत्यु हो गई। उस स्त्री को दूसरे दिन मृत्यु का समाचार मिला। समाचार मिलते ही दु:ख का वज्रपात हो गया। असह्य दु:ख हुआ। यदि दु:ख का संबंध उसके पति की मृत्यु की घटना से होता तो पति की मृत्यु तो पहले दिन ही दुर्घटना में हो गयी थी। अत: उसी समय दु:ख होना चाहिए था। परन्तु मृत्यु के दिन दु:ख नहीं हुआ तथा इस घटना से जितना दु:ख पत्नी को हुआ उतना दु:ख पुत्र को नहीं हुआ, पुत्र को जितना दु:ख हुआ उतना पड़ौसी को नहीं हुआ। पड़ौसी को जितना दु:ख हुआ उतना नगर के अन्य नागरिकों को नहीं हुआ। जिन्होंने मृत्यु लेखा पुस्तिका में उसकी मृत्यु का नामांकन किया, उन्हें बिल्कुल ही दु:ख नहीं हुआ। यही नहीं, जो पति का दुश्मन था उसे सुख हुआ, दु:ख हुआ ही नहीं। इससे तात्पर्य यह निकलना कि घटना दु:ख का कारण नहीं है, क्योंकि घटना यदि दु:ख का कारण होती तो दु:ख घटना घटते ही हो जाता। दु:ख हुआ घटना की जानकारी मिलने पर, उस जानकारी मिलने पर, उस जानकारी की प्रतिक्रिया करने पर,

जिसने जैसे और जितनी प्रतिक्रिया की, उसे वैसे ही उतना ही दुःख या सुख हुआ। आइए न्यायाधीश का उदाहरण लें। न्यायाधीश का एक ही निर्णय सुनकर एक पक्ष हर्ष विभोर हो जाता है और दूसरा पक्ष दुःख सागर में डूब जाता है और न्यायालय के कर्मचारियों को न दुःख होता है और न सुख। इससे स्पष्ट होता है कि घटना से सुख दुःख नहीं होता।

विश्व में प्रतिक्षण असंख्यात घटनाएं घट रही हैं, सैकड़ों व्यक्तियों की दुर्घटनाएँ या रोग से मृत्यु हो रही है, कितने ही दुःखी होकर आत्म-हत्या कर रहे हैं। सैकड़ों-हजारों व्यक्ति हर्ष-समारोह मनाकर आनंदित हो रहे हैं। यदि इन सब घटनाओं का सुख-दुःख रूप प्रभाव पड़ने लगे तो व्यक्ति एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकता। यही नहीं, जो व्यक्ति स्वयं घटना के प्रति प्रतिक्रिया कर सुखी-दुःखी हो रहा है उसका वह सुख अथवा भयंकर दुःख भी सदा बना रहता है, अपितु धीरे धीरे घटता जाता है और एक दिन वह सुख-दुःख विस्मृति के महागर्त में समा जाता है। कोई भी सुख-दुःख सदा नहीं रहने वाला है। कारण कि सुख-दुःख का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व ही नहीं है। वह व्यक्ति की मान्यता, कल्पना या प्रतिक्रिया का परिणाम मात्र है।

यदि किसी वस्तु, व्यक्ति, परिस्थित, घटना में सुख या दुःख निहित होता तो उस वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति के रहने निरन्तर वह सुख या दुःख होता रहता, परन्तु कोई सुख या दुःख एक क्षण भी एक-सा नहीं रहता। उसमें क्षण-क्षण परिवर्तन होता ही रहता है। उदाहरण के लिए उस एक विदेशी को लें जो भारत के ताजमहल की प्रशंसा सुनकर हजारों रूपये व्यय करके ताजमहल देखने आया। उसे ताजमहल देखने में सुख हुआ। परन्तु प्रतिक्षण वह सुख घटता गया और दो-तीन घंटे में तो यह स्थिति हो गई कि उसे ताजमहल देखने में कोई सुख नहीं रह गया और वह वहाँ से चलने की तैयारी करने लगा।

कारण-कार्य संबंध का यह नियम है कि कारण की समान स्थिति रहते हुए कार्य निष्पति बराबर होती ही रहती है, जैसे जब तक विद्युत की लहर आती रहती है और यन्त्र की स्थिति यथावत् रहती है, तब तक उससे चलने वाले यंत्र, रेडियो, टेलीविजन, पंखा बराबर उसी प्रकार समान रूप से चलते रहते हैं, क्योंकि उनमें कारण-कार्य संबंध विद्यमान है। परन्तु सुख-दुःख के विषय में यह बात नहीं देखी जाती है। जिस वस्तु, परिस्थिति या घटना को वह अपने दुःख-सुख का हेतु मानता है, उसके यथावत् विद्यमान रहने पर भी सुख-दुःख में परिवर्तन चलता रहता है। इससे यह स्पष्ट है कि वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति, अवस्था, घटना आदि सुख-दुःख के कारण नहीं है। सुख-दुःख का कारण हमारी स्वयं की अज्ञान जनित मान्यता है। इसे एक उदाहरण से समझें-जैसे सर्प को कोई व्यक्ति लाठी से मारता है तो सर्प अपने मारने व दुःख का कारण लाठी को मानता है। जिससे वह अपने फण का प्रहार लाठी पर करता है, लाठी को काटता है। जबकि वास्तविक कारण लाठी चलाने वाला व्यक्ति है, लाठी तो निमित कारण है या करण है। जैसे सर्प द्वारा अपनी मार का कारण लाठी को समझना भूल है उसी प्रकार अपने सुख-दुःख का कारण वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति आदि अन्य को समझना भूल है, ये सब तो निमित्त कारण है। मूल कारण तो अपनी अज्ञानजनित राग-द्वेषात्मक प्रतिक्रिया है। यदि हम प्रतिक्रिया न करें, वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति के प्रति उपेक्षा भाव रखें, उदासीन भाव व समता में रहें, तटस्थ या द्रष्टा रहें तो कोई वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति आदि सुख-दुःख नहीं दे सकती। कारण यह है कि सब अपने से भिन्न हैं पर हैं, अन्य हैं। अतः लेशमात्र भी सुख-दुःख नहीं दे सकते। दुःखी-सुखी हम स्वयं अपने ही द्वारा की गई प्रतिक्रिया से होते हैं। अतः दुःख-सुख का कारण अन्य को मानना भ्रान्ति है। इस भ्रान्ति के फलस्वरूप प्राणी दुःख के मूल कारण अपने दोष पर प्रहार नहीं करता। प्रत्युत दोष के फलस्वरूप में प्राप्त दुःख को दूर करने का प्रयत्न करता है। उसका यह कार्य वैसा ही है जैसे कोई व्यक्ति कांटों से बचने के लिए बबूल के कांटे तोड़ता रहे, पर बबूल की जड़ को न उखाड़े। बबूल की जड़ को न उखाड़ने से वह व्यक्ति बबूल के पहले के कांटे को दूर करता जायेगा और बबूल के नये कांटे आते रहेंगे और कांटों से छुटकारा कभी न होगा। इसी प्रकार दुःख की मूल भूल या अज्ञान को दूर न कर विद्यमान दुःख को दूर करते रहने से नये दुःख सतत उत्पन्न होते रहेंगे और दुःख से छुटकारा कभी भी नहीं होगा। यही कारण है कि सब प्राणी अपना दुःख दूर करने का अनन्तकाल से प्रयत्न कर रहे हैं, परन्तु दुःख आज भी ज्यों का त्यों बना हुआ है। दुःख में न कभी आई और न अंत हुआ, भविष्य में भी इस भूल के रहते अनन्तकाल तक कभी भी दुःख दूर नहीं होने वाला है।

- (साभार जिनवाणी से)

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय लिया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 20000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,** के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

गाँव की बेटी अपनी बेटी

□ रामशरणदास पिलखुवा

एक बार हापुड़ में सुप्रसिद्ध कांग्रेसी नेता एवं उत्तर प्रदेश विधान परिषद् (लेजिस्लेटिव कौंसिल) के भूतपूर्व सदस्य माननीय बाबू श्री लक्ष्मी नारायण जी बी.ए. के सभापतित्व में एक विराट सभा हुई थी, जिसमें भाषण हुआ था-सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता संसद सदस्य श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी का जिसमें उन्होंने एक अन्त्यज अग्रज प्रेम की महान् आश्चर्यजनक सत्य घटना सुनायी थी, जिसे सुनकर सभी बड़े आश्चर्यचकित रह गये थे। जो सज्जन यह कहते हैं कि सनातनधर्मी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों ने हरिजनों पर घोर अत्याचार किए हैं इन भारतविख्यात आर्यसमाजी नेता के मुख से यह सत्य घटना सुनकर क्या अब भी वे ऐसी बातें कहेंगे?

माननीय श्रीप्रकाशवीर शास्त्री ने अपने भाषण में कहा-समझ में नहीं आता कि जब हजारों-लाखों वर्षों से हम सभी हिन्दू आपस में बड़े प्रेम से रहते चले आए हैं और एक दूसरे को ताऊ-चाचा, बाबा-दादा कहते चले आए हैं तथा आपस में किसी प्रकार का भी हममें लड़ाई-झगड़ा नहीं रहा है तो आज जो हम आपस में इस प्रकार के व्यर्थ के लड़ाई-झगड़े कर रहे हैं और अपने को एक दूसरे से पृथक मान रहे हैं तथा एक दूसरे पर आघात कर रहे हैं, आखिर इससे क्या लाभ होगा? हम ब्राह्मण से लेकर हरिजन तक सब कैसे थे और सब परस्पर कैसे प्रेम से रहते थे, इस सम्बन्ध में एक सत्य घटना सुनिये-

हापुड़ के पास खरखौदा नामक एक ग्राम है। यह मेरठ जिले में पड़ता है। एक समय था कि इस खरखौदा ग्राम की बड़ी प्रतिष्ठा थी और उस समय त्यागी बिरादरी के वहाँ के जमींदार अपना प्रमुख स्थान रखते थे। उन दिनों ऐसी प्रथा थी कि गाँव के जो प्रमुख चौधरी होते थे, वे अपने सभी आस-पास के गाँवों की मालगुजारी इकट्ठी करके उसे दिल्ली सल्तनत के सरकारी खजाने में पहुँचा दिया करते थे।

एक बार बी बात है कि खरखौदा के त्यागी ब्राह्मणों ने, जो उस समय के प्रमुख चौधरी तथा माने हुए जमींदार थे, अपने आस-पास के गाँवों की मालगुजारी इकट्ठी की और उस मालगुजारी के रूपये लेकर सल्तनत के खजाने में पहुँचाने के लिए वे दिल्ली की ओर रवाना हुए। उस समय आज की भाँति मोटर, बस या रेल आदि तो थी नहीं। प्राय: बैलगाड़ियों से ही काम लिया जाता था। उन जमींदार चौधरियों ने अपने साथ खजाने की रक्षा की दृष्टि से चार-पाँच बैलगाड़ियाँ और बन्दूकें ली तथा दिल्ली के लिए चल दिए। जब वे सब लोग अपनी बैलगाड़ियों को लेकर शाहदरा के पास पहुँचे, तब उन्होंने वहाँ पर सड़क के पास वृक्षों के नीचे अपनी गाड़ियाँ रोक दी और सोचा कि कुछ देर विश्राम करके तब आगे चलेंगे।

दैवयोग से उस समय वहीं पर सड़क के पास हरिजनों के कुछ छोटे-छोटे बच्चे खेल रहे थे। खरखौदा गाँव से उनके यहाँ कुछ भाई लोग भात लेकर गाड़ी में आनेवाले थे। वे उनकी प्रतीक्षा में थे। उन बालकों ने जब इन गाड़ीवालों को देखा और इनसे यह मालूम किया ये गाड़ियाँ खरखौदा गाँव की हैं, तब उन बच्चों ने उनसे और ज्यादा बातें न करके यही समझ लिया कि हम जिन गाड़ियों की बहुत देर से बाट देख रहे थे और तलाश में खड़े थे, वे ही हमारे मामा भाइयों की गाड़ियाँ आ पहुँची हैं। इसलिए वे बड़े प्रसन्न हुए और झटसे दौड़े हुए अपने घरपर जाकर सबको बताया कि शहर से बाहर खरखौदा के भातइयों की गाड़ियाँ आकर खड़ी हो गयी हैं। तुम लोग जाकर उन्हें घरपर लिवा लाओ। इस शुभ समाचार को सुनकर हरिजनों के मोहल्ले में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी और मामा भातइयों को लिवा लाने की तैयारियाँ प्रारम्भ हो गयी।

बात यह थी कि शाहदरा में खरखौदा गाँव के हरिजनों की एक लड़की विवाही थी और अब उस लड़की की बेटी का विवाह था और उस विवाह में खरखौदा गाँव से मामा भातइयों के भात लेकर आने की उत्सुकता से प्रतीक्षा की जा रही थी। उस समय यह प्रथा थी और अब भी बहुत सी जगहों पर यह प्राचीन प्रथा चली आती है कि जब मामा भातई अपनी भानजी के लिए अपने गाँव से भात लेकर आते हैं तो वे भातई लोग गाँव से बाहर किसी जगह पर जाकर ठहर जाते हैं, एकदम सीधे गाँव में नहीं आते। फिर अपने आने की सूचना देने पर उनकी बहन हाथों में आरती का थाल लेकर गाती-बजाती हुई बहुत-सी अन्य स्त्रियों के साथ वहाँ जाती है और न भातइयों की आरती कर, रोली का तिलक लगाकर उन्हें बड़े मान-सम्मान के साथ गाँव में ले आती है।

अब जब उन बच्चों ने घरपर जाकर यह कह दिया कि खरखौदा से मामा भातइयों की गाड़ियाँ आकर खड़ी हो गयी हैं तो उन्होंने उनकी यह बात बिल्कुल सत्य मान ली और सब महिलाएँ अपने हाथों में आरती का थाल लेकर बड़े जोर-शोर से गाती-बजाती सड़क की ओर भातइयों के स्वागतार्थ और उन्हें अपने घरपर ले आने के लिए चल दी।

जब उन जमींदार चौधरियों ने सामने से बहुत सी स्त्रियों को इस प्रकार अपने हाथों में थाल लेकर दीपक जलाये और जोर-शोर से गाती बजाती हुई आते देखा, तब उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि हमारे पास इस प्रकार बहुत-सी स्त्रियाँ गाती-बजाती हुई क्यों आ रही हैं और यह सब क्या हो रहा है?

वे सब स्त्रियाँ उनके पास में आ गयीं और उन्होंने देखा कि ये गाड़ियाँ हमारे मामा-भातइयों की नहीं हैं, ये तो कोई दूसरे लोग हैं, तब उन्हें बड़ी लज्जा आयी। उनकी सारी प्रसन्नता जाती रही और उनके चेहरेपर उदासी छा गयी। चौधरी साहब ने जब उन महिलाओं से इस प्रकार बड़ी धूम-धाम से गाती-बजाती हुई आने का कारण पूछा, तब उन्होंने चौधरी साहब को बताया कि हम सब गाती-बजाती हुई इसलिए यहाँ पर आयी है कि आज हमारी लड़की का विवाह है और यहाँ शाहदरा में खरखौदा से आज हमारे भातई भात लेकर आनेवाले हैं। हमारे बच्चों ने भूल से आपलोगों को ही भातई समझकर हमें गलती से यहाँ पर भेज दिया है। अब हम लौट जाती हैं।

जब चौधरी साहब ने उन महिलाओं के मुख से यह सुना कि खरखौदा गाँव की हरिजन की लड़की शाहदरा में विवाही है और खरखौदा से भात आने की प्रतीक्षा की जा रही है, तब फिर क्या था, झटसे उन्होंने उनसे कहा कि 'ठहरो, वापस मत लौटो।' और अपने मन में यह विचार किया कि जब यह खरखौदा गाँव की बेटी है और हम उसी खरखौदा गाँव के रहनेवाले हैं तो फिर क्या गाँव के रिश्ते से यह हमारी अपनी बेटी नहीं हुई और जब यह भातइयों के भात लाने की प्रतीक्षा में है तो क्या हम खरखौदा के रहनेवाले इसके भाई नहीं है और भात भरना क्या हमारा कर्तव्य या धर्म नहीं है? क्या हमारे होते हुए ये इस प्रकार निराश होकर लौटेंगी? यदि आज बिना भात आये विवाह हुआ

तो इसमें क्या हमारे गाँव की बदनामी नहीं है? उन्होंने आपस में परामर्श किया तो सबने यही कहा कि 'यह हमारे खरखौदा गाँव की बेटी है और यदि भात नहीं भरा गया तो हमारे गांव का नाम बदनाम होगा। इसलिए अपने गाँव की बेटी को अपनी बेटी मानकर उसका भात भरना हमारा परम कर्तव्य है।' यह निश्चय करके उन चौधरी साहब ने उन महिलाओं से कहा कि 'तुम अब घबराओ नहीं, जब तुम हमें अपना भातई मानकर स्वागत करने आयी हो तो हम तुम्हारा भात भरेंगे और तुम्हें खाली हाथों निराश नहीं लौटने देंगे। हम भी खरखौदा गाँव के रहनेवाले हैं और खरखौदा की बेटी हमारी अपनी बेटी है। हम भातई हैं और हम तुम्हारे साथ भात लेकर चलते हैं। महिलाएँ यह सुनकर आश्चर्यचकित रह गयी और उनकी प्रसन्नता का पारावार नहीं रहा। चौधरीसाहब भातई बन गये और बड़ी प्रसन्नता के साथ उनके साथ हो लिए और महिलाएं गाती-बजाती उन्हें अपने घरपर लिवा ले गयीं। जिस समय इन चौधरी साहब ने हरिजन के यहाँ भातई बनकर भात भरने के लिए आने का समाचार मालूम हुआ, तब सारा गाँव इस अद्‌भुत दृश्य को देखने के लिए उमड़ पड़ा। भात भी कोई मामूली थोड़े ही था जिसकी कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की जा सकती, ऐसा वह भात था। चौधरी साहब ने दिल खोलकर और गाँव की बेटी को अपनी बेटी मानकर जितने भी रूपये वे मालगुजारी के खजाने में दाखिल कराने के लिए लिये ले जा रहे थे, सब भात में दे डाले। ब्राह्मण-हरिजन के इस अद्‌भुत प्रेम को देखकर और इस प्रकार हजारों रूपये भात में आये देखकर सारे गाँव में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी और सभी लोग चौधरी साहब की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे। बच्चे बच्चे की जबानपर इस भातकी चर्चा सुनायी देने लगी।

चौधरीसाहब भात देकर अपने स्थानपर वापस लौट आये। चौधरी साहब ने अपना सारा रूपया तो भात में दे डाला था और अब सल्तनत को रूपया कहाँ से दिया जाय, यह समस्या उनके सामने आयी। आपस में विचार-विनिमय हुआ और यह निश्चय हुआ कि यहाँ से दिल्ली जाकर सरकार से रूपया दाखिल करने के लिए कुछ दिनों की मोहलत ले ली जाय और फिर दिल्ली से लौटकर गाँव में जाकर और गाँव से रूपये लाकर खजाने में दाखिल किए जाये।

चौधरीसाहब दिल्ली जा पहुँचे और उन्होंने वहाँ पर जाकर वजीर को अपनी सारी बातें आद्योपान्त सुना डाली। उसे बताया कि हम मालगुजारी का सब रूपया अपने साथ लाये थे, पर एक हरिजन की लड़की जो हमारे गाँव की बेटी थी और गाँव के रिश्ते में हमारी भी बेटी लगती थी, हमने सब रूपये उसके विवाह के भात में दे डाले हैं। इसलिए हमें पुनः गाँव जाकर रूपया लाकर दाखिल करने के लिए कुछ दिनों की मोहलत दी जाय।

वजीर ने चौधरी साहब के मुख से यह बात सुनी तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने कहा कि चौधरी साहब। मैं आपकी यह बात बादशाह के सामने पेश करूँगा और फिर वे जितने दिनों की आपको रूपया दाखिल करने की मोहलत देंगे, आपको बता दूँगा।

वजीर ने बादशाह को सारी घटना आद्योपान्त कह सुनायी और मोहलत देने की बात उनके सामने रखी। बादशाह ने कहा कि 'चौधरी साहब को हमारे सामने पेश किया जाए।' चौधरी साहब को बादशाह के सामने पेश किया गया तो बादशाह चौधरी साहब के इस प्रकार हरिजन की बेटी को अपनी बेटी मानकर मालगुजारी के लिए लाये गये सारे रूपये भात में दे डालने पर उनसे नाराज नहीं हुए, बल्कि बड़े प्रसन्न हुए। उन्हें इस बात से बड़ी प्रसन्नता हुई कि हमारी सल्तनत में ऐसे आदमी भी मौजूद हैं कि जो एक हरिजन की बेटी को भी अपनी बेटी समझकर उसके विवाह में भात में सारे रूपये दे सकते हैं।

बादशाह चौधरीसाहब से कहा-'चौधरीसाहब! इस रूपये को जो तुमने हरिजन की बेटी के विवाह में दे डाला है, अब तुम्हें दुबारा यहाँ पर लाने की और खजाने में दाखिल करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह भात जो तुम अपनी ओर से दे करके आये हो, यह हमारी ओर से या सल्तनत की ओर से दिया हुआ मान लिया गया है।'

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 11,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

आज का तरूण दिग्भ्रमित तो नहीं?

❑ कृष्णमोहन गोयल

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः॥

उक्त मन्त्र में गुरु को नमन करने के लिए कहा गया है परन्तु यहां पर प्रश्न यह उठता है कि नमन किस गुरु को किया जायें? क्या हर गुरु को नमन किया जा सकता है? नहीं, इसके लिए नमन करने वाले ने इसके साथ एक शर्त जोड़ दी है और वह शर्त यह है कि नमन केवल उस गुरु को ही किया जाये जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त परमपिता के चरणों के साक्षात दर्शन करा दे और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त परमपिता के चरणों के साक्षात् दर्शन वही गुरु करा सकता है जो स्वयं भली भांति शिक्षित हो, मार्गदर्शित हो। यदि गुरु सत्य का मार्गदशर्न करने में असमर्थ है तो उस गुरु को नमन नहीं है।

शिक्षा मनुष्य को अहंकारी नहीं बनाती अपितु विनम्र बनाती है, उसे संस्कारवान बनाती है। यही वास्तविक शिक्षा का गुण है। विवेकशील और बौद्धिक शब्दों का प्रयोग न किया जाये तो हमारी शिक्षा में ही दोष आ जायेगा। परिणाम स्वरूप हमारे तरूण साक्षर तो हो रहे हैं परन्तु शिक्षित नहीं। साक्षर शब्द से तात्पर्य मात्र अक्षर ज्ञान से है जिनके संयोग से वह अपने विचार टूटी फूटी भाषा में व्यक्त कर सकता है। परन्तु वे संस्कारवान नहीं बन सकते हैं। वे चरित्रवान नहीं बन सकते हैं। वे विद्वान नहीं बन सकते हैं। वे अहकारी हो सकते है। परन्तु शिक्षित व्यक्ति एक संस्कारवान, चरित्रवान, विद्वान और ज्ञानवान होता है। वह फलों से लदे वृक्ष के समान विनम्र होता है। आज के तरूण अपने माता-पिता, अपने से बड़ों और गुरूजनों का वे आदर सम्मान करना भूल रहे हैं। कारण हमारी शिक्षा ही अपने मूल उद्देश्य से भटक गयी है और हमारे तरूणों को संस्कारवान, चरित्रवान बनाने में बाधक सिद्ध हो रही है। आज चरित्र के अर्थ बदल गये हैं। आज चरित्रवान होने का प्रमाण पत्र भारतीय पुलिस द्वारा प्रदान किया जाता है।

अब से कुछ वर्ष पूर्व एक विद्यालयों में अपने पूर्वजों, महापुरुषों, बलिदानियों के विषय में सोचने समझने का समय ही नहीं तो प्रेरणा कहां से मिलेगी और कौन देगा? इसी सन्दर्भ में आर्यजगत के विद्वान महात्मा हंसराज जी का कथन है-'संसार बिगड़ गया है, परिवार बिगड़ गया है, बच्चा बिगड़ गया है, देश बिगड़ गया है, जाति बिगड़ गयी है।' तो जब सभी कुछ बिगड़ गया है तो सुधारने को रह क्या गया है?

यह उल्लेखनीय है कि पांच हजार वर्ष पूर्व महाराज अग्रसेन जी ने समाज में ''शिक्षा और दीक्षा'' दोनों को समान रूप से संस्कारवान बनाने का आह्वान किया था। जिसके परिणाम स्वरूप आज समाज में अग्रवाल वंश जी को विशिष्ट पहचान है? अग्रवाल बन्धुओं द्वारा समय-समय पर धर्मार्थ और औषधालय्, शिक्षा, मन्दिर, अनाथालय और धर्मशालाओं की अनुपम भेंट समाज को नि:स्वार्थ भेंट की गई।

प्राचीन काल में जब बालक पढ़ने के लिए गुरु के पास जाया करता था तो सर्वप्रथम गुरु द्वारा उसको दीक्षित किया जाता था उसके पश्चात शिक्षा दी जाती थी। वह गुरु के सम्मुख बैठकर मन्त्रोच्चारण करते हुए कहा करता था- 'मैं समित्पाणि होकर आचार्य के समीप उपनीत होने तथा विद्याध्ययन करने आया हूं जिनके द्वारा मैं ज्ञान अर्जन कर तेजस्वी, कर्तव्यनिष्ठ बनूंगा।' परन्तु अब तो सरकार का उद्देश्य ही मात्र सभी को साक्षर करना है शिक्षित नहीं।

क्या स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दयानन्द, स्वामी रामकृष्ण परमहंस भैतिक सुखों का आनन्द नहीं ले सकते थे? लेकिन नहीं, इन्होंने परमार्थ के लिए ही इस धरा पर जन्म लिया था। इन्होंने परमार्थ के लिए गुरुकुलों की स्थापना की थी। क्या स्वामी विवेकानन्द भौतिक सुखों के लिए सदैव के लिए शिकागो में नहीं रह सकते थे? क्या महात्मा गाँधी सदैव के लिए दक्षिण अफ्रीका में वकालत करते हुए भौतिक सुख प्राप्त करते हुए अपना जीवन व्यतीत नहीं कर सकते थे? मेजर ध्यानचन्द जो हाकी के जादूगर कहलाते थे जिनको हिटलर जर्मन की ओर से हॉकी खेलने के लिए जर्मनी में समस्त प्रकार के भौतिक सुख देने को तैयार था। परन्तु वे उस समय के तानाशाह हिटलर को ठुकरा कर भारत आ गये। नेता जी सुभाष चन्द बोस क्या अपना समस्त जीवन जापान में रह कर नहीं व्यतीत कर सकते थे? परन्तु ये सब लोग शिक्षित थे, संस्कारवान थे, चरित्रवान थे। इनको अपनी जन्मभूमि भारत से प्यार था। भगवान राम ने स्वयं अपने श्रीमुख से अपनी जन्म भूमि की प्रशंसा करते हुए लक्ष्मण से कहा था-'**अपि स्वर्णमयी लंका न रोचते मे लक्ष्मण, जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।**' इसी श्रृंखला में हरगोविन्द खुराना, जयन्त नलिनीकर जैसे अनेक विद्वानों का नाम जोड़ा जा सकता है।

यह सर्वविदित है कि मानव को अन्य प्राणियों से अलग विशिष्ट पंक्तियों मे इसलिए ही खड़ा किया जाता है वह एक 'सामाजिक' प्राणी है। श्रेष्ठ मानव की परिभाषा में वह ही उतरता है जो सामाजिक शब्द को अपने जीवन में उतारे। स्वामी विवेकानन्द जैसे महान व्यक्तित्व को इसीलिए श्रेष्ठ कहा जाता है क्योंकि उन्होंने अपने अल्प जीवन में समाज के मूल्यों को आदर सम्मान किया। यही कारण है कि महर्षिगण अपने संस्कारो वश अपनी मातृभूमि का त्याग नहीं कर पाते हैं और अपना सर्वस्व केवल मातृभूमि की सेवा के लिए ही अर्पित कर देते हैं। विश्वप्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डा, नोश त्रेहन अमेरीका के समस्त वैभवों को त्याग कर भारत आ गये थे और उन्होंने भारत में चिकित्सा प्रारम्भ की। हमारे देश के वर्तमान प्रधानमन्त्री डॉ. मनमोहन सिंह हार्वर्ड विश्वविद्यालय के शिक्षक रह चुके हैं।

यहां हमारा आशय है आज का तरूण समुदाय अपना पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश छोड़कर जब विदेश में जाकर बस जाता है तो उसके माता-पिता की कौन देखभाल करेगा जो उम्र के चौथे सोपान पर होते हैं। जिनको एक कवच की आवश्यकता होती है। क्या किसी ने माता-पिता को अपने तरूण को लावारिस छोड़ते देखा है। यही भी कहा जाता है कि अप्रवासी होने के बाद 'वह न घर के रहे और न घाट के।' उनकी अगली पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक पहचान के लिए तरसती है। क्या तरूण समुदाय का दायित्व नहीं बनता है कि वह अपने माता-पिता का उसी प्रकार पालन पोषण करें जैसे माता-पिता ने उनका किया है। ऐसी स्थिति की उपेक्षा क्यों? क्यों है आज का तरूण दिग्भ्रमित?

- 113, बाजार मोर, अमरोहा-244221

ईश्वर की उपासना करने से बुद्धि पवित्र होती है। परिणामस्वरूप मनुष्य भविष्य में बुरे कर्म नहीं करता है अथवा कम करता है। बुद्धि पवित्र होने से हम पवित्र कर्म करेंगे। जिससे जीवन सुखी होगा। - **स्वामी दयानन्द**

निन्दा-निषेध

❒ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

मनुष्य को जीवन में कभी ना तो किसी की निन्दा करनी चाहिए और ना ही किसी की निन्दा सुननी चाहिए। दूसरों के अवगुण देखने के स्थान पर औरों के गुण और अपनी सदा गलतियां देखने में ही मनुष्य का कल्याण है। हंस सदा मोती चुनता है और उसके ठीक विपरीत कौआ सदा कूड़े को खाता है। यानि हमें भी जीवन में सदैव हंस की भांति औरों के गुण देखकर उन्हें धारण करने का प्रयास करना चाहिए। दूसरों के अवगुण देखकर उनकी निन्दा करके तो हम भी कौए के समान हो जायेंगे। वैसे भी मनुष्य जब किसी की गलतियां निकालकर अंगुली उसकी ओर उठाता है तो उसके स्वयं के हाथ के नीचे छिपी उसकी अपनी ही शेष तीन अंगुलियां उसके अपनी ओर मुड़कर आत्मनिरीक्षण करने की चेतावनी देती है। जैसे कह रही हों दूसरों की गलतियां, अवगुण, दोष देखने वाले पहले तू स्वयं अपनी गलतियां दोष सुधार ले। यदि हम केवल दूसरों के अवगुण देखकर निन्दा ही करते रहेंगे तो निश्चित रूप से उन दोषों को खुद धारण कर लेंगे और इसके विपरीत यदि हम गुण ग्राही बनकर औरों के गुण देखेंगे तो हंस बन जायेंगे

ऋग्वेद में मा निन्दत! ऋ. 4/5/2 कहकर वेद भगवान ने आदेश दिया निन्दा मत करो। चाणक्य ने निन्दा करने वाले को महाचंडाल बताया है और कहा कि निन्दा मनुष्य की जीते जी सारी दुर्गतियां कर देती है। अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि निन्दा कहते किसे हैं। क्रान्तदर्शी महर्षि देव दयानन्द ने निन्दा की परिभाषा दी है ''जो मिथ्या ज्ञान, मिथ्या भाषण झूठा आग्रह जिससे उसके गुण छोड़कर उसके स्थान पर अवगुण लगाना निन्दा कहलाती है।'' यह ठीक है कि हम दूसरों की निन्दा ना करें ना सुने लेकिन इसके विपरीत यदि कोई हमारी निन्दा करता है तो उसे ध्यानपूर्वक धैर्य से सुनें और निन्दक का धन्यवाद करें जिसने हमें हमारी गलतियां दोष बताकर दूर करने का अवसर प्रदान किया। महात्मा कबीर ने तो अपनी निन्दा करने वाले के लिए यहां तक कहा-

निन्दक नियरे राखिये, आंगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय॥

यदि मनुष्य अपने निंदक को अपने पास बैठाकर धैर्यपूर्वक अपनी निन्दा सुनने का सामर्थ्य रखता है तो वह अपने दोष दूर कर सकता है। यदि हम अपनी निन्दा नहीं सुन सकते तो हमें अपने अवगुणों का ज्ञान नहीं हो पाता और हम उन्हें दूर नहीं कर सकते। वैसे भी एक स्वाभाविक नियम है जैसी क्रिया वैसी प्रतिक्रिया। यदि हम औरों को गालियां देंगे तो लोग भी हमें प्रत्युत्तर में गालियां ही देंगे। मनुष्य को मधुमक्खी की भांति होनी चाहिए जो फूलों पर बैठकर उनका मीठा रस लेती है और माधुर्य मधु का निर्माण करती हैं। ठीक उसी प्रकार यदि हम दूसरों के गुण देखकर ग्रहण करते रहेंगे तो हमारा हृदय निर्मल और पवित्र हो जायेगा। हमें जीवन में यह संकल्प लेना होगा।

औरों के हम दोष न देखें, अपने दोष विचारें।
निन्दा करें न कभी किसी की, यही एक गुण धारें॥

अन्त में निष्कर्ष निकलता है कि यदि हम दूसरों के अवगुण दोष देखकर निन्दा ही करते रहते हैं तो उन दोषों को स्वयं भी ग्रहण करके दोषी बन सकते हैं और साथ ही स्वयं भी प्रत्युत्तर में निन्दा के पात्र बनते हैं। इसके विपरीत यदि हम दूसरों के गुण देखते हैं तो उनको धारण करके गुणी बनकर मन को पवित्र एवं निर्मल कर लेते हैं। हमें अपनी निंदा को बड़े धैर्य से सुनना चाहिए ताकि अपने दोषों को जानकर उन्हें दूर कर सकें और इसके लिए हमें अपने निन्दक का धन्यवाद करना चाहिए। जिस प्रकार ठोस पर्वत आंधी तूफान में विचलित नहीं होता अडिग रहता है उसी प्रकार हमें भी प्रशंसा या निन्दा सुनकर समभाव रहना चाहिए। जिस मनुष्य में अपनी निन्दा धैर्यपूर्वक सुनने की सहनशक्ति आ जाती है वह अत्यंत वीर विजयी होता है।

- 502 जी एच 27, सैक्टर 20 पंचकूला

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि घर से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) | शिवराजवती आर्या उप-प्रधाना | रामनाथ सहगल (मन्त्री)

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में

आवश्यकता

❒ कक्षा 8, 9 एवं 10 में हरियाणा प्रान्त के पाठ्यक्रम से गणित एवं विज्ञान पढ़ाने की क्षमता रखने वाले योग्य अध्यापक की आवश्यकता है।

❒ हरियाणा प्रान्त के पाठ्यक्रम से अथवा गुरुकुलीय पाठ्यक्रम से अंग्रेजी पढ़ाने वाले योग्य अध्यापक की आवश्यकता है।

सम्पर्क करें:-आचार्य रामदेव जी

डाक:- टंकारा, जि. मोरबी, पिन. 363650 (गुजरात)

जीवन अंजलि

❑ सुखवीर आर्य

मनुष्य वही है जिसका जीवन मानवता के लिए, मानवता में परमेश्वर के लिए है। व्यक्तित्व वही है जो परमेश्वर को उत्सर्ग हो गयी। जीवन वही है जो उन्हें समर्पित है। कर्म वे ही हैं जो ह्रदय स्थित परमेश्वर के संकल्प को अभिव्यक्त करें। संसार का मार्गदर्शन करने का अधिकार उसे ही है जो उच्च चेतनाएँ ग्रहण करता है। जिसके अंदर दिव्य प्रेरणाएं अवतरित होती हैं, जो उनके द्वारा ही प्रेरित-चालित होता है। मनुष्यों में वही भ्रान्ति से बाहर है, जो धर्मों के, संप्रदायों के प्रभाव से मुक्त है। जिसकी जीवन-दिशा, जिसका मार्ग ह्रदयेश्वर निर्धारित करते हैं।

प्रथम कर्तव्य के रूप में मेरे सम्मुख जो कर्म रहता है, वह है परमेश्वर के संकल्प की चरितार्थता। उनके संकल्प को जानना, जो कि आत्मा-साक्षात्कार के द्वारा संभव होता है-तत्पश्चात् जीवन में, विचार एवं कर्म में उसकी अभिव्यक्ति। यही मेरे जीवन का स्वरूप है।

मेरे कर्तव्य का द्वितीय स्वरूप है, मानवता की सेवा। इसकी प्रेरणा भी मैं ह्रदयेश्वर से ग्रहण करता हूँ। इस प्रेरणा की अभिव्यक्ति उनके द्वारा निर्धारित की जाती है। इसका क्षेत्र, इसका स्वरूप सब उनपर निर्भर करता है।

मेरे कर्तव्य का तृतीय स्वरूप है-आर्य समाज। आर्य समाज के साथ मेरा आंतरिक संबंध है। मैं महर्षि दयानन्द के द्वारा आर्य समाज से युक्त हूँ। किन्तु, समाज सेवा का स्वरूप मेरा अपना है। मैं पदार्थों एवं प्राणियों की आंतरिक स्थिति में अधिक विश्वास करता हूँ। चेतना के परिवर्तन पर अधिक बल देता हूँ। समाज के बाह्य स्वरूप में परिवर्तन लाने से, मनुष्यों के स्वभाव में कुछ सात्विक भाव जगाने से, कर्मों से कुछ सात्विक कर्मों का सम्मिश्रण करने से समाज के चेतना-स्तर में उत्थान नहीं आता। उनके दृष्टिकोण में आत्मा की विशालता नहीं आती। उनके अंदर स्वार्थभाव बना रहता है। वे अहंकार के द्वारा अधिकृत होते रहते हैं। अंतरात्मा एवं अहंकार में अंतर करना उनकी क्षमता के बाहर की वस्तु रहती है। उनकी प्रकृति में मिश्रण रहता है। वे अपनी संपूर्ण सत्ता परमेश्वर को समर्पित नहीं कर पाते। यह शास्त्रों का, इतिहासकारों का अनुभव है।

वर्तमान स्वभाव को पीछे छोड़ना, उससे ऊपर उठना, आत्मा के स्वभाव को धारण करना, यह शास्त्रोक्त शिक्षा है जो प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वभाव की वस्तु बनानी चाहिए। एक आध्यात्मिक व्यक्ति का अनुभव हम सुनें। उसका कथन है:- मैं अपने सच्चे व्यक्तित्व को, शरीर मन इंद्रियों के पीछे, आंतरिक स्तर पर अनुभव करता हूँ। इसीलिए दूसरे व्यक्तियों के साथ भी मेरा संबंध बाह्य स्तर पर कम, आंतरिक स्तर पर अधिक रहता है। मैं अपनी दृष्टि पर नहीं, जो कि बाह्य आकारों पर ठहरती है, वरन्, अपनी आत्मा की दृष्टि पर निर्भर करता हूँ। उसी के इंगित पर चलता हूँ। उसका निर्णय मेरे लिए, मेरी सत्ता से सर्वोपरि रहता है। कोई व्यक्ति चाहे मुझे अच्छा न लगे। उसका व्यवहार, उसका चरित्र मुझे न रूचे, फिर भी मैं आत्मा के इंगित को आगे रखकर चलता हूँ और उस व्यक्ति को गले लगाता हूँ। उसका सम्मान करता हूँ। उसके ह्रदय में परमात्मा की उपस्थिति को प्रणाम करता हूँ। उससे प्रेम करता हूँ। उसके मंगल के लिए सब कुछ करने को उद्यत रहता हूँ।

आत्म-अनुसंधान के मार्ग पर प्रत्येक जिज्ञासु व्यक्ति इस अनुभव पर पहुँचता है कि मनुष्य का बाह्य सीमित अज्ञानमय व्यक्तित्व ही सब कुछ नहीं है। हम इतने मात्र नहीं है जितना अपने आपको जानते हैं या जो हमें प्रथम दृष्टिपात में गोचर होता है। वर्तमान बाह्य व्यक्तित्व के पीछे हमारी सत्ता के और भी भाग हैं, उनका क्षेत्र और अधिक विशाल है, दिव्य है। उनकी दृष्टि ऊँचे सत्य पर आधारित है और हम कहेंगे, उन भागों के साथ जब हमारा तादात्म्य स्थायी हो जाता है हम दूसरे प्रकार के व्यक्ति हो जाते हैं। हमें आंतरिक दृष्टि प्राप्त होती है। जिससे हम अब तक वंचित थे। हमें चेतना प्राप्त होती है जिसके द्वारा हम आंतरिक स्तरों पर सचेतन होते हैं। हमारे अंतश्चक्षु उन्मीलित होते हैं। हमारे लिए सर्वा प्रभु दर्शन करना संभव हो जाता है। हम मानव मात्र को आत्मीय देखते हैं। संसार में जीवन एक है, चेतना एक है, अस्तित्व एक है, जिस भौतिक तत्व से हमारे शरीर निर्मित हैं वह तत्व एक है, यहाँ सब उस परम पिता परमात्मा का विस्तार है। यह दृष्टि, यह चेतना-स्तर हमारे लिए स्वाभाविक हो जाता है।

हे मानव जाग! अंतश्चक्षु उद्घाटित कर! तू सर्वत्र परमेश्वर के दर्शन करेगा। तेरी आत्मा उसे युगों से खोज रही है। उसके मिलन की प्यास से वह व्यथित है-इस तथ्य के प्रति सचेतन हो। सृष्टिकर्ता की खोज को जीवन लक्ष्य के रूप में निर्धारित कर। जो इन प्राणियों एवं पदार्थों की सृष्टि कर इनमें छिप गया है, उसे खोज। परम पिता के दर्शन की उत्कण्ठा अपने ह्रदय में जगा। कुछ ऐसा कर कि आत्म साक्षात्कार की भूख तुझे दूसरा सब भुला दे। सत्य का पुजारी बन। तेरा जीवन अंजलि रूप हो, पूजा का थाल हो। तेरे कर्म, तेरे विचार, तेरे भाव सब पूजा के व्यंजन हो। तेरी आत्मा प्रदीप का रूप धारण करे। थाल को चमकाये। मंदिर को ज्योतिर्मय करे। प्रभु-मूर्ति के चरणों में तेरा स्थान हो। सब जगमगा उठे उस आत्म-तेज में। गुंजित हो सब वेद-मन्त्रों से, मधु-छन्दों से। ऋचाओं की मधुर ध्वनि प्रतिध्वनित होकर मंदिर से बाहर आये। दिशाओं में फैले। इस देश की वायु ही नहीं, भर उठे समस्त संसार का वातावरण उन दिव्य प्रकंपनों से। मानों, स्वर्ग अपनी पूर्ण प्रभा के साथ धरा पर उतर आया हो।

टंकारा समाचार
के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

गिरने से मत डरिए

❑ डॉ. विजय अग्रवाल

यहाँ मैं आपसे एक ऐसी बात कहने जा रहा हूँ, जो हम सबसे जुड़ी हुई है और वह है–हारने की बात, पराजित होने की बात। यह बात है निराश होने की बात, किन्तु फिर भी उठकर खड़े हो जाने की बात।

मैंने बहुत सोचा लेकिन सफल नहीं हो सका। आप सोचकर देखिए शायद आप सफल हो जाएँ। आपको सोचना यह है कि क्या आप किसी भी एक ऐसे आदमी का नाम बता सकते हैं, जो अपनी जिन्दगी में कभी भी असफल नहीं हुआ हो। इसे आप यूँ भी कह सकते हैं कि क्या आप पैदल चलने वाले एक भी ऐसे व्यक्ति का नाम बता सकते हैं, जो कभी गिरा न हो। मैं तो किसी भी ऐसे आदमी के बारे में सोच नहीं पाया हूँ और मुझे उम्मीद है कि आप भी नहीं सोच पाएंगे, क्योंकि ऐसा आदमी आपको मिलेगा ही नहीं। और यदि आपको मेरी इस बात पर विश्वास हो रहा है तो फिर आपको इस बात पर भी विश्वास हो जाना चाहिए कि आपके साथ भी यही होगा।

अक्सर होता यह है कि जब हम असफल हो जाते हैं, तो अन्दर टूट जाते हैं। कुछ लोग तो इतने अधिक टूट जाते हैं कि उन्हें चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा दिखाई देने लगता है और वे सोच लेते हैं कि अब कुछ नहीं हो सकता, जबकि ऐसा होता नहीं है। एक बहुत अच्छी बौद्ध कहावत है कि **''चारों तरफ अंधेरा है तो कोई बात नहीं। बर्फ गिर रही है, तो कोई बात नहीं। सूरज फिर से निकलेगा, क्योंकि सूरज कभी मरता नहीं है।''**

यहाँ मैं आपके लिए एक ऐसी सच्ची कहानी प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिसे सुनने के बाद शायद आप इस पर विश्वास न करें, लेकिन आपको इस पर विश्वास करना ही चाहिए, क्योंकि यह बहुत अधिक नहीं, बल्कि लगभग पौने दो सौ साल पुरानी बात है।

यह उस आदमी की कहानी है जो 21 वर्ष की उम्र में व्यापार में असफल हुआ, 22 वर्ष की उम्र में चुनाव की दौड़ में हारा, 24 साल की उम्र में फिर से व्यापार में असफल हुआ, 26 साल की उम्र में उसकी प्रेमिका की मृत्यु हो गई, 27 साल की उम्र में उसे नर्वस ब्रेकडाउन हो गया। 34 साल की उम्र में वह संसद में चुनाव में हारा, 36 साल की उम्र में फिर हारा, 45 साल की उम्र में एक बार फिर सीनेटर बनने से वंचित रहा और 52 वर्ष की उम्र में वह अमेरिका का राष्ट्रपति चुन लिया गया। इस शख्स का नाम था अब्राहम लिंकन। कभी-कभी तो यही भी कहा जाता है कि असफलताएं जितनी बड़ी होंगी, सफलताएं भी उतनी ही बड़ी मिलेगी। **घुड़सवार ही घोड़े पर से गिरा करते हैं, घुटनों के बल चलने वाले नहीं।**

महत्वपूर्ण बात यह नहीं होती कि वह गिरा की नहीं। महत्वपूर्ण बात यह होती है कि वह गिरकर उठा कि नहीं। और यदि गिरकर उठा तो उठने में समय कितना लगाया, क्योंकि यही उस बात का निर्धारण कर देगा कि वह कितने समय बाद सफल होगा। जो जितनी जल्दी उठ जाएगा, वह उतनी जल्दी सफल भी हो जाएगा। यही इस प्रकृति का नियम है और इसी नियम को आत्मसात करके हमें अपनी जिन्दगी के इस सफर को जारी रखना है। इससे हमें निराशा नहीं होगी और हमारी यह यात्रा जारी रह सकेगी। – सभार 'लाइफ मंत्रा' से

प्रवेश प्रारम्भ
वैदिक संस्कृति का संवाहक
आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया

यह गुरुकुल दिल्ली से 100 किलोमीटर एवं जयपुर से 150 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। अत: आपसे निवेदन है कि आप गुरुकुल में अधिक से अधिक संख्या में कन्याओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें।

गुरुकुल की विशेषताएं- ❑ कक्षा 6 से 9 तक तथा 11वीं व शास्त्री प्रथम वर्ष में प्रवेश प्रारम्भ। ❑ महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से मान्यता प्राप्त।

सम्पर्क करें- आचार्या प्रेम लता, फोन-01495-270503, मो. 09416747308, **संयोजक- श्रीमती अरूणा सतीजा,** दूरभाष: 0141-2623732, मो. 09460183872

श्री रामनाथ सहगल जी के जन्म दिवस पर
गुरुकुल स्कूल नित करें नमस्कार

दिल्ली-मथुरा-काशी-हरिद्वार
अजय टंकारा से भरे हुंकार
घर-घर में हो वेद प्रचार
सुखी बसे सब संसार
वेद मार्ग पर सबको चलाकर
कल्याण मार्ग का पथिक बनाकर
आर्य समाज की राह दिखाकर
जो दयानन्द की करे जय-जयकार
उस रामनाथ सहगल जी को बारम्बार नमस्कार
कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का ज्ञान करा कर
बच्चे, बूढे और जवान मिलाकर
हिन्दु-मुस्लिम-सिख-ईसाई
खुश रखे सबको आर्य बनाकर
देश विदेश में प्रसिद्धि पाकर
महिमामयी छवी बनाकर
जीवन अपना सार्थक किया
आर्य समाज का कर्ज चुका कर
धन्य-धन्य है जीवन आपका बारंबार
गुरुकुल स्कूल सब नित करें नमस्कार
हो शतायु स्वस्थ जीवन आपका
विद्यार्थी मिल सब करें पुकार

– डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी, रिजनल डायरेक्टर, डी.ए.वी., पानीपत

बोध-अग्नि आधान हो गया हृदय कुण्ड में

❑ देवनारायण भारद्वाज

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम्।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥
जब जब होइधर्म की हानी। बाढ़े असुर और अभिमानी।
तब-तब प्रभुधरि मनुज शरीरा। हरहिं सकल सज्जन की पीरा॥

श्रीमद् भगवतगीता एवं श्री राम चरित मानस के यह यह अंश बहुत श्रुत हैं। धर्म जीवन का आधार और अभ्युदय साथ साथ प्रदान करता है। धर्म की छाया छटी नहीं कि अधर्म को अन्धेरी बढ़ी नहीं। मानव को यह सावधानी हटी नहीं कि दुर्घटना घटी नहीं। युग-युग में यह झंझावात मनुष्य को झेलना पड़ता है। चाहे श्री राम का युग हो चाहे श्री कृष्ण का युग हो अधर्म का अत्याचार अनाचार एवं व्यभिचार बढ़ता है तो परमात्मा को अपनी किसी मुक्तात्मा को भेजकर इस का परिष्कार व उद्धार करना पड़ता है।

ऐसी ही भीषण सन्तोषकारी आपद्दशाओं के मध्य अधर्म अज्ञान के ऊपर धर्म-ज्ञान की संस्थापना के लिए गुजरात प्रान्त के मौरवी राज्य स्थित ग्राम टंकारा में दीर्घ प्रतीक्षा के बाद माता यशोदा अमृताबेन एवं पिता कर्षन जी तिवारी के गृह में फाल्गुन कृष्ण दश भी सं. 1881 वि. को पुत्र का जन्म हुआ।

माता-पिता का हृदय हर्षातिरेक से परिप्लावित तो हुआ ही, परिवार एवं नगर भर में आनन्दोत्सव का वातावरण छा गया। पुत्र के जात कर्म, नामकरण आदि संस्कार और वर्ष गाँठ आदि उत्सव मनाये जाने लगे। इन शुभावसरों पर हृदय खोलकर दान-मान दक्षिणायें प्रदान की गयी। शैव मतानुयायी पिता बालक को मूलशंकर व मूलजी कह कर बुलाते किन्तु उनकी वैष्णवी माता उन्हें दयाराम व दयाल जी सम्बोधित कर सुख प्राप्त करती। बालक को पाँच वर्ष की अवस्था में नागरी अक्षर का बोध कराया गया। परिवारी जन बालक को मन्त्र, श्लोक व उनके अर्थ कण्ठस्थ कराने में सुख का अनुभव करने लगे। सभी को उनकी बाल सुलभवाणी सुनकर हर्ष होता। बालक का आठवें वर्ष में समारोह यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हो गया। शिव महात्म्य की कथायें सुनाकर बालक को दृढ़ शैव बनाने का अभियान चल पड़ा। दस वर्ष के होते होते मूल शंकर पार्थिव शिवोपासना भी करने लगे। पिता तो बहुत चाहते थे कि मूल शंकर व्रत उपवास भी रखें, किन्तु माता के प्रतिरोध से वे बचे रहे, परन्तु शिव-शंकर महादेव की चमत्कारी कथा सुनकर चौदहवें वर्ष में मूलशंकर शिवरात्रि पर व्रत धारण एवं रात्रि जागरण के लिए समुद्यत हो गये।

टंकारा ग्राम के बाहर जड़ेश्वर महादेव के मन्दिर में उन्हें इस अनुष्ठान के लिए ले जाया गया। सुरीले कीर्तन व भजन गायन के संगीतमय वातावरण में पूजा पाठ व भोग प्रसाद शिव पिण्डी पर चढ़ाया गया। रात्रि के दो प्रहर तक तो सब जागते रहे, किन्तु तीसरे प्रहर में पिता-पुजारी-भक्तगण सभी सो गये। मूर्छापन्न अवस्था देखकर मूलशंकर को अचरज तो हुआ किन्तु उन्हें कोई निराशा नहीं हुई, क्योंकि सुनायी गयी काल्पनिक कथाओं के अनुसार उनके हृदय में शिव-दर्शन की आशा बलवती हो रही थी। नींद उनको भी आ रही थी, किन्तु जल के छींटे लगा लगाकर वे अपनी आँखो को महादेव के शुभागमन व दर्शन के निमित निरन्तर खोले रहे। हां, शिव पिण्डी पर एक हलचल अवश्य हुई जो मूषकों के उस चढ़ बैठने व उछल कुद कर पिण्डी पर पूजार्थ चढ़ाये गये फल-फूल-मिष्ठान को कुतरने व खाने के कारण थी। वे मूषक जन्तु खाने के साथ पिण्डी पर अपने मल मूत्र का विसर्जन कर से दूषित भी करते जा रहे थे। यह दयनीय दृश्य देखकर शिव-दर्शन के प्रलोभन में सुनायी गयी काल्पनिक कहानियों उड़नछू हो गयी थी और वे अपने पिता जी को जगाकर शंका समाधान में जुट गये थे। पिता के उत्तर-प्रत्युत्तर से वे किंचित सन्तुष्ट न हुए और उन्होंने सारे बट्राज को यहीं छोड़कर मां के पास घर जाने का निश्चय कर लिया था। सिपाही के साथ पिता ने मूल शंकर को माता के पास भेजा तो दिया, किन्तु कुछ भी खाकर उपवास भंग न करने का कठोर निर्देश भी दे दिया। मां के समीप बालक जायें, मां उसे कुछ खिलाये नहीं और वह बालक जो प्रभात बेला से मध्य रात्रि तक भूखा रहा हो, उसे खिलाये बिना मां को चैन कैसे पड़ सकता है। माँ सान्त्वना के स्वर में बोल पड़ी। मैं जानती थी तू तो भूखा रह नहीं सकता था फिर भी अपनी हठ ध र्मी करके तू ने यह उपवास रखां ले यह मिष्ठान भोजन और सो जा। उस रात्रि मूल शंकर ऐसे सोये जो प्रात: आठ बजे ही जग सके। उपवास अनुष्ठान भंग करने के कारण उन्हें पिता के कोप का भाजन तो बनना पड़ा, किन्तु अग्नि ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा की यह मौन आहुति उनके मन में संकल्प की ज्वाला बनकर जाग उठी थी।

बाल्यकाल में मूलशंकर को जो यजुर्वेद का पाठ पढ़ाया गया था वही आज उनके जीवन में सार्थक होकर बोल रहा था। हे अग्ने हम भली भांति सो जायें, पर तुम भली भाँति जागते रहकर हमको अप्रमादित रखते हुए जगाते रहना। इसीलिए तो हमें ऋग्वेद की प्रथम ऋचा "अग्निमीले" अर्थात् अग्नि की स्तुति वन्दना करते रहने की राह दिखाती है। प्रत्यक्ष प्रस्तुत भौतिक अग्नि हमें ईश्वराग्नि का पथ प्रशस्त करती है। ज्ञान-गमन्-प्राप्ति की जिवृती तरंगे बहाती है। शिवरात्रि जागरण का व्रत धारण करने सभी गाढ़ निद्रा में सो गये थे। अकेले मूल शंकर जागते दिखायी दे रहे थे, पर नहीं वहाँ कोई और भी जाग रहा था, वह था शिव मन्दिर का दीपक। यदि वही नहीं जागता तो अकेले मूलशंकर के जागते रहने से यह बोध क्रान्ति नहीं होने वाली थी, जिसने सम्पूर्ण विश्व को आलोड़ित किया। दीपक ने ही मूषकों के शिवपिण्डी पर दुरागमन कर दूषणकारी दृश्यों को दिखाया और उनके हृदय में बोध किरण को जाग्रत किया। दीपक रात्रि में सूर्य का प्रतिनिधि बनकर जलता है। सूर्य में परमेश प्रभु का ही प्रकाश दमकता है। शिष्य ने गुरुजी से दीपक जलाते समय प्रश्न किया यह ज्योति दीपक में कहां से आती है। गुरुजी की एक ही फूंक से दीपक बुझ गया और उन्होंने शिष्य से पूछा यह ज्योति कहाँ चली जाती है? तात्पर्य यह ईश्वर अदृश्य अन्तर्यामी से ही आती है और उसी में विलीन हो जाती है।

याज्ञिक यज्ञ करते समय सर्वप्रथम दीपक की ज्योति का आह्वान करते हैं, फिर इसी दीपक द्वारा हवन कुण्ड में अग्न्याधान करते हैं। ठीक

इसी प्रकार शिव रात्रि जागरण की बेला में मूलशंकर के हृदय कुण्ड में देवालय के दीप ने बोध-किरण का अग्न्याधान कर दिया था।'' उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि'' यजु. 15.54) हे यज्ञाग्ने तू भली भांति उद्धीप्त होकर उठ और समिधाओं को जैसे प्रज्जलित कर ती है वैसे ही मेरे मस्तिष्क की कोशिकायें (सीमन्त) दे दीव्य मानकर दे। दीपक अन्धकार को हरता, प्रकाश को फैलाता है। प्रकाश ज्ञान का प्रतीक है। दीपक अपनी लौ से असंख्य अन्य दीप जला देता है। नये दीपकों में ज्योति जग जाने पर भी पुरातन दीपक के प्रकाश में भी कोई कभी नहीं आने वाली है। दीपक की लौ सदा ऊपर को उठती है। दीपक को प्रकाश फैलाने के लिए स्वयं जलना पड़ता है। इस दीपक द्वारा किये गये अग्न्याधान से उत्पन्न बोध का उद्घोष प्रक्षेपणास्त्र के विष्फोट से भी भीषण होता है, प्रत्युत यह अन्तर्बोध का ही परिणाम होता है। मूलशंकर अगले सात वर्ष तक अपने पिता-परिवार के परिवेश में तो रहे, किन्तु अपने गृह त्याग एवं वैराग्य भाव को छिपा नहीं पाये। इसीलिए उनके विवाह बन्धन की तैयारी की जाने लगी, जो निरर्थक सिद्ध हो गयी, क्योंकि उन्होंने इसी ललित लावण्यमय उत्सव के मध्य सदा-सर्वदा के लिए स्वयंमेव महाभिनिष्क्रण अंगीकार कर लिया था।

हृदयकुण्ड के इस बोधाग्नि-अग्न्याधान के फलस्वरूप मूलशंकर उत्तरोत्तर ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य, संन्यासी व महर्षि दयानन्द सरस्वती के अग्निधारण करते हुए अपनी दीप-वर्तिका से पण्डित गुरुदत्त, आर्य पथिक, पण्डित लेखराम महात्मा हंसराज, पण्डित श्यामजी कृष्ण वर्मा, स्वामी श्रद्धानन्द तथा अन्यान्य महादीपकों को जलाते हुए उनसठ वर्ष की आयु में दीपावली के असंख्य दीपकों की ज्योत्सना के मध्य लेखारम्भ में प्रस्तुत गीता एवं मानस के उद्धरणों की भूमिका का निर्वहन करते हुए परमेश प्रभु की उसी महाज्योति में जा मिले, जिसने उनको इस वसुधा पर भेजा था।

- वरेण्यम अवन्तिका-1, रामघाट मार्ग, अलीगढ़-202001, उ.प्र.

DENGUE AND PAPAYA

Dengue is a viral disease caused by mosquito bite having Aedes *aegypti* as the vector. Dengue attacks generally start in late summer and ends at early winter. There is fatigue, high fever, pain in joints and muscles in Dengue. Rashes may also appear in Dengue. Dengue a self limiting disease completes its own cycle of duration where number of platelet start decreasing in blood and it starts increasing after a specific decrease. At later stage leakage in blood capillaries star and hence pose a danger to life. When there is fever at night and symptoms of loss of appetite and there is weakness then the line of diagnose goes towards Dengue fever. There is no such any specific treatment for Dengue disease.

However it has got established as a fact in the society that leaves of *Papaya plants are useful in the dengue. Yes as per an estimate of W.H.O.* 80% of population in most of the countries prefers alternative system of medicine using medicinal plants. *Though there is no mention of treatment of Dengue by Papaya plants either in ancient texts of Ayurveda nor in medical science yet the Carica papaya* a member of the Caricaceae has been reported to be used frequently in dengue which helps in increasing platelet count in dengue fever and of course in hemorrhagic dengue fever too. The ability to increase platelet in dengue lies in the leaves of the plant papaya and not in fruits and seeds. Researches done later have shown that intake of juice of papaya leaves contain ample potential to induce rapid production of platelets. Giloye i.e. *Tinospora cordifolia* is also used in dengue fever. Its decoction or juice of the green stem is used in fever. As there is no curative medicine for the Dengue the approach in developing the line of treatment lies in developing effective mosquito control, develop medicine to check capillary leakage. Papaya leaves are easily available at many places its use is of great value for the patients of Dengue though it is better to take precautions to remain away from mosquito bites. www.healthyminute.in

Prof. Anup Kumar Gakkhar, Rishikul Govt.P.G.Ayurvedic College & Hospital, Haridwar

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **5000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

समाचार दर्पण

उपदेशक महाविद्यालय टंकारा में स्वचालित रोटी बनाने की मशीन स्थापित

टंकारा जन्मभूमि स्थित भोजनालय में मन्त्रोच्चारण के द्वारा मशीन का उद्घाटन करते श्री बांटी साहब एवम् साथ में श्री हंसमुख भाई परमार, श्री रमेश मेहता जी एवम् आचार्य रामदेव।

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के अन्तर्गत संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में इस समय 150 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। प्रतिदिन तीन समय भोजन हेतु लगभग 2100 रोटियां दिनभर में बनानी पड़ती है। पाचक को प्रत्येक सत्र में 700 रोटी बनाने हेतु भोजन से 2.30 घंटे पूर्व रोटियां बनाने की प्रक्रिया शुरु करनी पड़ती है जिससे ब्रह्मचारियों को भोजन करते समय रोटियां ठण्डी एवम् कम मुलायम हो जाती है। इस कारण ट्रस्ट ने आधुनिक रोटी बनाने की मशीन खरीदने का निर्णय लिया जिसमें 45 मिनट में 700 रोटियां गरमा-गरम बनकर तैयार हो जाती है। 15 दिन पूर्व इस रोटी बनाने की मशीन को 2,50,000 की लागत से खरीद लिया गया है और यह सफलतापूर्वक कार्य कर रही है।

एक बहुत ही सादे उद्घाटन समारोह में टंकारा के स्थानीय तहसीलदार श्री बांटी साहब के करकमलो द्वारा हुआ। इस अवसर पर आचार्य रामदेव, टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री हंसमुख भाई परमार एवम् कार्यालय अध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र जी मेहता उपस्थित थे।

अपील

समस्त ऋषि भक्तों से विनम्र प्रार्थना है कि उपरोक्त रोटी बनाने की मशीन जो कि विशेषकर ब्रह्मचारियों को अधिक सुविधाजनक एवम् स्वादिष्ट भोजन प्राप्त हो सके को ध्यान में रखते हुए ही लगाई गई है। लगभग पुरे भारत से अपने-अपने घरों से और विशेषकर माँ के वत्सल्य से दूर घर की सुख सुविधाओं जैसे वातावरण हमारे ब्रह्मचारियों को गुरुकुल में भी प्राप्त हो। इस कारण से इस मशीन का महत्व ज्यादा है।

हम समस्त उन दानी माताओं को विनम्र प्रार्थना करना चाहते हैं कि इस मध्य में ब्रह्मचारियों पर ममतामय आर्शीवाद देते हुए सहयोग राशि अवश्य भेजें। जो एक बार में पूर्ण 2,50,000/- रूपया देगें उनका नाम मशीन पर अंकित करवाया जाएगा।

आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

महर्षि दयानन्द जन्मभूमि टंकारा में
महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय
प्रवेश प्रारम्भ

विद्यालय में दो प्रकार के पाठ्यक्रम हैं।

❑ **प्रथम पाठ्यक्रम** महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक हरियाणा से मान्यता प्राप्त है। विद्यालय में प्राच्य व्याकरण पाठ्यक्रम से अध्ययन कराया जाता है। प्रवेश प्राप्त करने के लिए कक्षा सात से उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। आठवी कक्षा में प्रवेश प्राप्त होगा। विद्यालय में पूर्व मध्यमा, उत्तर मध्यमा, शास्त्री एवं आचार्य पर्यन्त का अभ्यासक्रम है।

❑ **द्वितीय पाठ्यक्रम** में उपदेशक कक्षाएं चलती हैं। जिसमें व्याकरण, वेद, दर्शन, उपनिषदादि के उपरान्त ऋषि दयानन्द के समस्त ग्रन्थ पढाये जाते हैं। भजन, प्रवचन तथा कर्मकांड विशेष रूप से सिखा कर आर्यसमाज के पुरोहित हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है। यहाँ से उत्तीर्ण स्नातक आर्यसमाजों अथवा आर्य संस्थाओं में पुरोहित अथवा अन्य सेवा कार्य प्राप्त कर सकते हैं।

दोनों पाठ्यक्रमों में इच्छुक प्रवेशार्थी अपने निकटतम आर्यसमाज से परिचय-पत्र प्राप्त कर लावें तो ज्यादा उचित होगा। दोनों पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्राप्त करने के लिए जून 2014 के प्रथम सप्ताह तक आचार्य जी से पत्र-व्यवहार से जानकारी प्राप्त करें।

सम्पर्कः आचार्य रामदेव शास्त्री पो. ता. टंकारा, जि. राजकोट (गुजरात) पिन. 363650

वेदारम्भ व समावर्तन संस्कार सम्पन्न

वेदारम्भ व समावर्तन संस्कार पर श्री योगेश जी मुंजाल, ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट को पुष्प गुच्छ भेंट करते हुए कैप्टन विजय स्याल जी, मन्त्री आर्य समाज मॉडल टाउन। द्वितीय चित्र में भजन प्रस्तुत करती हुई गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियां

आर्य कन्या गुरुकुल, लुधियाना का 16वां वेदारम्भ व 12वां समावर्तन संस्कार आयोजित किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता कुलपति महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल (प्रधान, आर्य समाज मॉडल टाऊन, लुधियाना) ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. मोनिका जी सेठी (प्रि. बी.सी.एम. कॉलेज ऑफ एजुकेशन, लुधियाना) पधारी। सभा के प्रारंभ में गुरुकुल के मैनेजर श्री मंगत राम जी मेहता ने मुख्य अतिथि जी का परिचय दिया। इस वर्ष 55 ब्रह्मचारियों का व 20 ब्र. का जो पंजाब बोर्ड की परीक्षा देकर गुरुकुल में पाँच वर्ष व्यतीत कर घर वापिस जा रही है, उनका समावर्तन संस्कार भी किया गया। ब्र. ने वेदमन्त्रों, भजनों, भाषणों व योगासनों द्वारा सभा को मन्त्र मुग्ध कर दिया। मुख्य अतिथि ने कहा कि मानव जीवन अनन्त व असीम है। प्रधानाचार्य जी ने मुख्य अतिथि जी को स्मृति चिन्ह भेंट किया। श्री ध्रुव जी मित्तल (प्रधान गुरुकुल करतारपुर) ने वार्षिक परीक्षा में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाली ब्र. को सम्मानित किया और दसवीं की परीक्षा देकर जाने वाली 20 ब्र. को स्मृति चिन्ह भेंट किया।

कैप्टन विजय जी स्याल ने ब्र. को आर्शीवाद देते हुए कहा कि परमपिता परमात्मा की कृपा से ही ऐसी संस्थाओं में शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त होता है। अध्यक्ष जी ने समस्त ब्र. को आशीर्वाद दिया।

चुनाव समाचार

आर्यसमाज मस्जिद मोठ, नई दिल्ली

प्रधान- श्री चतर सिंह नागर **मन्त्री**- श्री ओम प्रकाश सैनी

कोषाध्यक्ष- श्री देवेन्द्र कुमार

आर्य समाज अशोक विहार-I, दिल्ली

प्रधान- श्री राम मेहर आर्य **मन्त्री**- श्री जीवन लाल आर्य

कोषाध्यक्ष- श्री ओम प्रकाश गुप्ता

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

www.tankara.com पर उपलब्ध है

स्वाति बाहेती को शोध उपाधि

कोटा की आर्यपुत्री स्वाति बाहेती को पीएचडी की उपाधि। स्वाति बाहेती ने राजनीति विज्ञान में राजस्थान विधानसभा में विपक्ष की भूमिका (11वीं एवं 12वीं विधानसभा का तुलनात्मक अध्ययन) विषय पर राजकीय महाविद्यालय कोआ की प्रोफेसर श्रीमती मंजू मालव के निर्देशन में अपने शोध प्रबंध न का पूर्ण किया है।

आर्य समाज रामपुरा के प्रधान व जिला सभा के मन्त्री कैलाश बाहेती की सुपुत्री स्वामी बाहेती प्रारम्भ से ही मेधावी छात्रा रही है। स्मरण रहे स्वाति बाहेती कोटा के जेडीबी गर्ल्स कॉलेज की सत्र 2004-05 में छात्रासंघ अध्यक्ष भी रह चुकी हैं।

स्वाति बाहेती के शोध का कार्य पूर्ण करने पर आर्य समाज के अर्जुनदेव चड्ढा, कंवरलाल सुमन, जे.एस. दुबे, हरिदत्त शर्मा, रामप्रसाद याज्ञिक, डॉ. के.एल. दिवाकर, अग्निमित्र शास्त्री, ओमप्रकाश तापड़िया, रामदेव शर्मा, रामकृष्ण बलदुआ, रामदेव शर्मा, नरदेव आर्य, श्रीचन्द गुप्ता ने शुभकामनाएं प्रदान करते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

महात्मा हंसराज जन्मदिवस

डी.ए.वी. पुलिस पब्लिक स्कूल, रोहतक के छात्रों ने अध्यापक, अध्यापिकाओं ने जिला कारागार सुनारिया रोहतक में यज्ञ करके महात्मा हंसराज जी का 150वां जन्मदिवस मनाया। इस अवसर पर सभी महिला कैदियों ने यज्ञ में आहूति अर्पित की व अनेक ईश्वर भक्ति के भजन प्रस्तुत किए।

विद्यालय की प्राचार्य श्रीमती अनीता कत्याल जी ने महात्मा हंसराज जी के जीवन से शिक्षा लेने के लिए महात्मा हंसराज जी के जीवन पर प्रकाश डाला। स्कूल के छात्रों ने गीत द्वारा महिला कैदियों व यज्ञ पर उपस्थित सभी सज्जनों को अच्छे कार्य करने का सन्देश दिया।

बच्चों ने बांधे परिण्डे

प्राणीमात्र के कल्याण की कामना करते हुए डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल तलवण्डी कोटा के प्री प्राइमरी सेक्सन में नन्हें बच्चों के मध्य जिला आर्य समाज कोटा ने पक्षियों को पानी के लिए मिट्टी के परिण्डे बांधे। इस अवसर पर जिला आर्य समाज कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि ईश्वर के बनाए इन मूक पक्षियों के लिए गर्मी में परिण्डे बांधकर नियमित पानी भरना सत्कर्म है। इस अवसर पर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने बच्चों को पानी का महत्व बताया। इस अवसर पर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल एलएमसी सदस्य डॉ. वेदप्रकाश गुप्ता, अरविन्द पाण्डेय, उषा परमार, अनिता उतरेजा आदि उपस्थित थे। विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने गायत्री मन्त्रोच्चार के साथ परिण्डे बांधकर नियमित दाना-पानी डालने का संकल्प लिया।

विश्व कल्याण हेतु अभियान

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद जयपुर के तत्वावधान में आध्यात्मिक सप्त क्रान्ति अभियान प्रारंभ हुआ। अग्निहोत्र विशेष आहुतियों के साथ सम्पन्न हुआ। आर्ययुवक परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल यश ने उद्बोधन दिया कि संगतिकरण दान, जड़ तथा चेतन देवों की पूजा है। विश्व कल्याण का यज्ञ ही प्रमुख सोपान है। यज्ञोपरान्त संबोधित करने वाले विशिष्ट जन आर्य समाज मानसरोवर के प्रधान अर्जुन देव कालड़ा, उपप्रधान ईश्वर दयाल माथुर एवं प्रेम प्रकाश शर्मा सपत्नीक मुख्य यजमान रहे। नगर के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. यादराम के भजनों का अनुकूल सन्देश गया।

शोक समाचार

श्री अनिल आर्य के छोटे भ्राता श्री सत्यप्रकाश सपरा, आयु 45 वर्ष का गत 5 मई 2014 को 'मिश्र' में आकस्मिक निधन हो गया। अग्रज भाई श्री ओम सपरा, लायन श्री प्रमोद सपरा, श्री विजय सपरा, श्री संजय सपरा से यह सबसे छोटे भ्राता थे। टंकारा ट्रस्ट परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

મહર્ષિ દયાનન્દજીની પવિત્ર જન્મભૂમિ ટંકારામાં
આપના નામને કાયમી યશ મળે તેવી યોજના

આપ નીચેની કોઈપણ એક અથવા વધારે યોજનામાં, યોજના દીઠ રૂ. ૧૧૦૦૦-૦૦ (અગિયાર હજાર) રૂપિયાનો ફાળો આપી યશના ભાગી બની શકો છો

(૧) ભોજન સેવા તિથિ, (૨) યજ્ઞ સેવા તિથિ, (૩) ગૌ-સેવા તિથિ, (૪) ઔષધ સેવા તિથિ

આ માટે કોઈ એક અથવા વધારે યોજના મુજબ પ્રત્યેક યોજના માટે અગિયાર હજાર રૂપિયા દાનામાં આપો. આપ આપના પરિવારના જે તે સદસ્યની જે તે તિથિ (જન્મ, વિવાહ અથવા પુણ્ય તિથિ) લખાવશો તે તિથિએ આપના તરફથી સેવા થશે. સંસ્થામાં બોર્ડ પર નામ લખવામાં આવશે. તિથિ અગાઉ આપને જાણ કરવામાં આવશે.

આશા છે કે તિથિ દાન આપીને દયાનન્દજીની પવિત્ર જન્મભૂમિ ટંકારામાં આપનું નામ કાયમી રીતે યશસ્વી કરવાની આ અમુલ્ય તકનો લાભ ચોક્કસ ઉઠાવશો.

સમ્પર્ક કરો:- શ્રી મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ, દ્વારા - આર્યસમાજ અનારકલી, મન્દિર માર્ગ, નવી દિલ્હી ૧૧૦૦૧૧,

ફોન:- ૦૧૧-૨૩૩૬૦૦૫૯, ૨૩૩૬૨૧૧૦

गुरुकुल प्रभात आश्रम में प्रवेश-परीक्षा

प्राचीन वैदिक आर्ष-परम्परा के संवाहक गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ, उत्तर प्रदेश में नवीन प्रवेशार्थी छात्रों की प्रवेश परीक्षा पूर्व वर्षो की भाँति इस वर्ष भी 26 जून से 30 जून 2014 तक सम्पन्न होगी। प्रवेशार्थी छात्र की अर्हता पञ्चम श्रेणी उत्तीर्ण, मेधावी, स्वस्थ, सुशील एवं 10 वर्षीय होनी चाहिए। प्रवेश-परीक्षा लिखित एवं मौखिक दो चरणों में एक दिन में ही होगी। लिखित परीक्षा में 60 प्रतिशत प्राप्तांक छात्र ही मौखिक परीक्षा का अधिकारी होगा। विशेष जानकारी के लिए आचार्य, गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोला झाल, मेरठ से सम्पर्क करें। दूरभाष संख्या- 09748747920, 09711325677। निवदेक-प्रबन्धक, गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोला झाल, मेरठ-250501

नवीन प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) में कक्षा छठवीं एवं सातवीं में योग्य विद्यार्थियों हेतु प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। इच्छुक जन दिनांक 15 जून से 15 जुलाई 2014 के बीच में आने वाले प्रत्येक रविवार में मौखिक व लिखित परीक्षा दिलवाकर छात्रों को प्रवेश करवा सकते हैं। जानकारी हेतु निम्न नम्बरों पर सम्पर्क करें-09424471288, 09907056726

प्रवेश सूचना

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय करतारपुर जिला. जालन्धर में सत्र 2014-15 के प्रवेश के लिए 20 जून 2014 की तिथि निश्चित की गई है। (1) प्रवेश केवल छठी कक्षा में ही दिया जाएगा अन्य किसी भी कक्षा में नए छात्रों को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। (2) प्रवेश परीक्षा प्रातः 10 बजे से 1 बजे तक चलेगी। (3) परीक्षा में भाग लेने के इच्छुक ब्रह्मचारियों को प्रवेश दिया जाएगा। परीक्षा में भाग लेने के लिए आने वाले छात्र अपनी चार पासपोर्ट साईज फोटो साथ लाएं। पांचवी श्रेणी में उत्तीण होने का प्रमाण पत्र तथा स्थानान्तरण पत्र आदि साथ लाएं। परीक्षार्थी सफेद कुर्ता पाजामा पहन कर ही परीक्षा में बैठ सकेंगे। शाकाहारी तथा संस्कारशील आर्य परिवारों के बच्चों को ही प्रवेश दिया जाएगा। सम्पर्क- फोन-0181-2782252, 2782249, मो. 9888764311, 9041289397

विश्व कल्याण महायज्ञ सम्पन्न

वैदिक विद्वान पूज्य पाद आचार्य देवराज (अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रवक्ता) द्वारा संस्थापित एवं संचालित वैदिक सत्संग परिवार पंजाब द्वारा आयोजित विश्व कल्याण गायत्री महायज्ञ 406 पटेल नगर जलन्धर रोड कपूर थला में बड़ी धुम धाम से सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा पूज्य आचार्य दिवाकर भारती जी (भोगा) द्वारा यज्ञ का प्रारम्भ हुआ।

आवश्यकता है

आर्ष गुरुकुल नोएडा एवं आर्ष कन्या गुरुकुल वेदधाम, सोरखा, सेक्टर-115, नोएडा के लिए अनुभवी विज्ञान, गणित, अंग्रेजी व अन्य विषयों के लिए शिक्षकों की आवश्यकता है। इच्छुक महानुभाव अपना पूर्ण विवरण फोटो सहित भिजवा देवें। गुरुकुल शिक्षकों को वरीयता। मानदेय अनुभव के आधार पर। सेवा निवृत शिक्षक शीघ्र सम्पर्क करें।

- कैप्टन अशोक गुलाटी, मन्त्री, दूरभाष-09871798221, 0120-2505731, 0120-4345731

उपनिषद का पठन-पाठन

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) में दिनांक 23 से 29 जून 2014 तक सप्त दिवसीय माण्डुक्योपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्, श्वेताश्वतरोपनिषद् के पठन-पाठन के शिविर उपनिषद् के मर्मज्ञ डॉ. धर्मवीर आचार्य (अजमेर) के निर्देशन में हो रहा है। उपनिषद् पढ़ने के इच्छुक जन सम्मिलित हो लाभ उठा सकते हैं। व्यवस्था पूर्ण निःशुल्क है।

आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दालबाजार) लुधियाना में आर्य समाज स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। यज्ञ के उपरांत वैदिक प्रवक्ता वेदप्रकाश शास्त्री ने अपने वक्तव्य में महर्षि दयानन्द को आर्य समाज की स्थापना करने पर वैदिक युग की वैचारिक क्रान्ति का उद्घोषक बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे स्वामी शोभानन्द जी ने आर्य समाज की संगठन शक्ति को सुदृढ़ बनाने के लिए मिलजुलकर कार्य करने की प्रेरणा दी।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वैदिक मिशन मुम्बई ने आर्य समाज सांताक्रुज में 22-23 मार्च 2014 को आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अपना वार्षिकोत्सव मनाया। इसका मुख्य विषय था ''वैदिक विरक्त सम्मेलन'' जिसका संचालन स्वामी प्रणवानन्द जी ने किया। इस कार्यक्रम में स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित मुख्य तीन ग्रन्थों की समीक्षा की गयी। इस सम्मेलन में आए संन्यासीगण, आचार्यों एवं प्राध्यापकों ने अपने-अपने शोध-पत्र भी प्रस्तुत किए। वैदिक मिशन मुम्बई के अध्यक्ष डॉ. सोमदेव जी शास्त्री द्वारा लिखित पुस्तक 'चतुर्वेद परिचय' का विमोचन किया गया।

पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

आर्य समाज में अनुसंधान, लेखन, प्रकाशन व सम्पादन परम्परा और महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के सिद्धान्तों को प्रगति देने के उद्देश्य से गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (पंजी) ने पांच साहित्य पुरस्कार प्रारम्भ किए गए हैं। इन पुरस्कारों का उद्देश्य आर्य समाज में सुन्दर, संग्रहणीय, मौलिक हिन्दी, संस्कृत इत्यादि भाषा में अधिक से अधिक गद्य प पद्य साहित्य के प्रचार-प्रसार में सहायक वैदिक साहित्य, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, शोध प्रबंध, भजन संग्रह, शोध, अभिनन्दन ग्रंथ, आयुर्वेद इत्यादि के लेखकों, प्रकाशकों व सम्पादन को प्रोत्साहन करना है। स्व. लेखक/साहित्यकार/सम्पादक की प्रकाशित कृति को उनके पुत्र, पुत्री, पति, पत्नी व उत्तराधिकारी भी भेज सकते हैं।

इन पुरस्कारों के लिए कोई भी लेखक, सम्पादक, उत्तराधिकारी, शोधकर्ता अपनी-अपनी पुस्तकें जो जनवरी 1995 से 31 दिसम्बर 2014 तक के मध्य प्रकाशित हुई पुस्तकों की एक-एक प्रतियां, लेखक के दो चित्र, परिचय के साथ अपनी-अपनी प्रविष्टियाँ व्यक्तिगत रूप से, कोरियर या रजिस्टर्ड डाक द्वारा 31 दिसम्बर 2014 तक सोसायटी के पते पर भेज सकते हैं। सचिव, नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट, गुगनराम सोसायटी भवन 202, पुराना हाउसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा), सचिव चलभाष-09466532152, 09255115175

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक आठवां-नवां परिचय सम्मेलन

आठवां सम्मेलन दिनांक 15 जून 2014 रविवार समय प्रात: 10 बजे, स्थान: आर्य समाज मल्हारगंज इंदौर (म.प्र.)
नवां सम्मेलन दिनांक 20 जुलाई 2014 रविवार समय प्रात:10 बजे, स्थान आर्य समाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली

अब तक 375 से अधिक विवाह सम्पन्न

राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने जा रहे इस आठवें एवं नवें आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन हेतु आर्य कार्यकर्त्ता आर्य परिवारों से संपर्क बना रहे हैं। आर्य परिवारों में परिचय सम्मेलन के लिए काफी उत्साह है। वे अपने विवाह योग्य बच्चों के रजिस्ट्रेशन करा रहे हैं। बायोडाटा फार्म भरकर साथ में पंजीयन शुल्क (एक सम्मेलन के तीन सौ रूपये तथा दोनों सम्मेलन के लिए छ: सौ रूपए) का ड्राफ्ट दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेजकर रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। रजिस्ट्रेशन फार्म मो. न. 09540040339 (श्री विजय आर्य) पर अपने डाक का पता भेजकर मंगा सकते हैं अथवा हमारी वेबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलोड भी कर सकते हैं तथा ऑनलाइन भी फार्म भर सकते हैं। रजिस्ट्रेशन फार्म इंदौर के लिए 5 जून तथा दिल्ली के लिए 10 जुलाई 2014 तक सभा कार्यालय में भिजवा देवें, जिससे आशार्थी का नाम परिचय विवरण पुस्तिका में प्रकाशित किया जा सके। श्री विनय आर्य ने बताया कि सम्मेलन में भाग लेने बाहर से आये आर्य परिवारों के ठहरने, चाय-नाश्ते व दोपहर के भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर रहेगी।

– अर्जुनदेव चड्डा, राष्ट्रीय संयोजक, मो. 09414187428

अभिमान

एक घर के मुखिया को यह अभिमान हो गया कि उसके बिना उसके परिवार का काम नहीं चल सकता। उसकी छोटी सी दुकान थी। उससे जो आय होती थी, उसी से उसके परिवार का गुजारा चलता था। चूंकि कमाने वाला वह अकेला ही था इसलिए उसे लगता था कि उसके बगैर कुछ नहीं हो सकता। वह लोगों के सामने डींग हांका करता था। एक दिन वह एक संत के सत्संग में पहुंचा। संत कह रहे थे, 'दुनिया में किसी के बिना किसी का काम नहीं रूकता। यह अभिमान व्यर्थ है कि मेरे बिना परिवार या समाज ठहर जाएगा। सभी को अपने भाग्य के अनुसार प्राप्त होता है।' सत्संग समाप्त होने के बाद मुखिया ने संत से कहा, 'मैं दिन भर कमाकर जो पैसे लाता हूं उसी से मेरे घर का खर्च चलता है। मेरे बिना तो मेरे परिवार के लोग भूखे मर जाएंगे।' संत बोले, 'यह तुम्हारा भ्रम है हर कोई अपने भाग्य का खाता है।' इस पर मुखिया ने कहा, 'आप इसे प्रमाणित करके दिखाएं।' संत ने कहा, 'ठीक है। तुम बिना किसी को बताए घर से एक महीने के लिए गायब हो जाओ।' उसने ऐसा ही किया। संत ने यह बात फैला दी कि उसे बाघ ने खा लिया है। मुखिया के परिवार वालों ने कई दिनों तक शोक मनाया। गांव वाले ने मिलकर लड़की की शादी कर दी। एक व्यक्ति छोटे बेटे की पढ़ाई का खर्च देने को तैयार हो गया। एक महीने बाद मुखिया छिपता-छिपाता रात के वक्त अपने घर आया। घर वालों ने भूत समझकर दरवाजा नहीं खोला। जब वह बहुत गिड़गिड़ाया और उसने सारी बातें बताई तो उसकी पत्नी ने दरवाजे के भीतर से ही उत्तर दिया, 'हमें तुम्हारी जरूरत नहीं है। अब हम पहले से ज्यादा सुखी है।' उस व्यक्ति का सारा अभिमान उतर गया।

- ज्ञान प्राप्त करने के लिए खर्च किया गया हर पैसा सबसे ज्यादा लाभ देता है।
- जिन्दगी की सबसे बड़ी समस्या यही है कि हम बूढ़े बहुत जल्द हो जाते हैं और बुद्धिमान बहुत देर से बनते हैं।
- अपनी प्रतिभा को कभी मत छिपाओ।
- अज्ञानी होना शर्म की बात नहीं है। शर्म की बात है सीखने के लिए तैयार न होना।
- कल के लिए वह काम कभी मत छोड़ा जो आप आज कर सकते हैं।
- एक पैसा बचाना ही एक पैसा कमाना है।
- बुद्धिमान वह है जो कुछ सीखता है, ताकतवर वह है जो इच्छाओं को जीतता है, धनवान वह है जो संतुष्ट है।

राजकोट के श्री हरिश भाई अढ़िया ने अपने गृहस्थाश्रम प्रवेश की 25वीं वर्षगांठ के शुभअवसर पर टंकारा गुरुकुल की गौशाला को प्रथमवार प्रसुता गौ का दान दिया। श्री हरिश भाई अढिया अपनी धर्मपत्नी के साथ। साथ में खड़े हैं गुरुकुल के आचार्य श्री रामदेव जी शास्त्री एवं व्यवस्थापक श्री रमेश मेहता।

आर्य विदुषी पद्मश्री से अलंकृत

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर की पूर्वाध्यक्षा, जम्मू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की पूर्वाध्यक्षा और इस समय गांधी सेवासदन जम्मू की अध्यक्षा प्रो. वेद कुमारी घई एक विशिष्ट तथा संस्कृत, हिन्दी, डोगरा, अंग्रेजी की सृजनशीला लेखिका हैं। 14 दिसम्बर 1931 में जम्मू में जन्मी वेदकुमार घई ने बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय से 1960 में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। कला संकाय की अध्यक्ष के रूप में कई विश्वविद्यालयों के शोध पटलों की सदस्या रही। उनके निर्देशन में बीस एम.फिल. तथा अठारह पी.एच.डी उपाधि प्राप्त शोध प्रबन्ध लिखे गये हैं। अनेक राष्ट्रीय तथा अन्त राष्ट्रीय सम्मेलनों में उन्होंने ने भाग लिया। प्रो. वेद कुमारी घई को कई पुरस्कार/सम्मान प्राप्त हो चुके हैं जिनमें से कुछ एक हैं। भारत के राष्ट्रपति द्वारा संस्कृत में वैदुष्य के लिए सम्मान वर्ष 1997। - शारदा सम्मान 1993, लल्लेश्तरी सम्मान 2007, स्त्री शक्ति पुरस्कार भारत सरकार वर्ष 2009। समाज सेवा के लिए स्वर्णपदक जम्मू कश्मीर सरकार 1995। अंगराल्त सम्मान वर्ष 2005। महाराजा गुलाबसिंह पुरस्कार 2012। पदम् श्री सम्मान भारत के राष्ट्रपति द्वारा 2014।

आओ याद इन्हें भी कर लें

❐ ओम प्रकाश बजाज

कट गए पेड़ नष्ट हुए वन,
असंतुलित हो गया पर्यावरण
ऋतुचक्र हो गया अनियंत्रित,
भयभीत कर रहा ग्लोबल वार्मिंग
फैल रहे कांक्रीट के जंगल, हो रही पानी की किल्लत हर ओर।
नहीं बचे पशु पक्षियों के बसेरे,
कहां जाएं कहां रहें ये बेचारे?
विलुप्त हो रहीं एक एक करके,
इन की बहुत सी प्रजातियां
भुला बैठे हम अपने स्वार्थ में, कि इनका भी उतना हक है
ईश्वर की बसाई इस दुनिया पर,
नहीं है कोई प्राणी बिना मकसद
उपयोग है इन में से प्रत्येक का,
बनाते है सुंदर मनमोहक रंगबिरंगी
ये हमारी इस दुनिया को।

हमारी परम्परा में चीटियों को, गायों को नागों को कौवों कुत्तों को
पर्वों पर श्राद्धों में अनेक अवसरों पर,
खिलाने का प्रावधान था
आधुनिकता प्रगतिशीलता के भ्रम में,
भुला बैठे हम वह सब
सामने आने लगे हैं परिणाम
आइए थोड़ा सा चुग्गा, थोड़ा सा पानी किसी उचित स्थान पर
रखने की फिर से शुरुआत करें, पुण्य का कार्य करें और
अपने बच्चों को अच्छी सीख दें!

- बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर-482001, म.प्र.

महात्मा हंसराज जन्मोत्सव मनाया गया

आर्य युवा समाज और डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पूंडरी के भव्य यज्ञशाला में महात्मा हंसराज के जन्मदिवस का पर आचार्य रविन्द्र कुमार शास्त्री के ब्रह्मत्व में किया गया। यज्ञ के पश्चात भजन तथा संगीत अध्यापक संदीप व स्वदेश कुमार द्वारा भजन की प्रस्तुति की गई। श्री सत्यावान द्वारा महात्मा हंसराज जी के जीवन पर विस्तृत प्रकाश डाला गया। रविन्द्र कुमार शास्त्री द्वारा वैदिक प्रश्नोतरी के माध्यम से उपस्थित कक्षा चौथी से बाहरवीं तक के सभी छात्रों से प्रश्न आर्य समाज, स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा महात्मा हंसराज से संबंधित प्रश्नोतर पूछे गए तथा बच्चों ने बड़े हर्षोल्लास के साथ प्रश्नों का उत्तर दिया तथा विजेता छात्रों को प्राचार्या श्रीमती साधना बख्शी द्वारा पारितोषिक भी दिया गया।

(पृष्ठ 2 का शेष)

फल हुआ या यह कहिये कि भोजन करने वालों का स्वार्थ हुआ। इसी प्रकार परोपकारी कार्यों में भी उसका यश पाना, प्रसिद्धि पाना यह सब भी परोपकार करने वालों का स्वार्थ हुआ। यदि हम बिना यश की इच्छा रखे भी परोपकारी कार्य करते हैं, उसमें भी हमारी मोक्ष पाने की इच्छा छिपी रहती है। यदि हमारी इच्छा न भी रहे तब भी ईश्वर उसके परोपकारी कार्यों के फलस्वरूप मोक्ष देता ही है। इसलिए बिना यश की भावना रखी जाने वाली इच्छा भी इच्छा के अन्तर्गत ही आ जाती है, पर ईश्वर जो भी कार्य करता है उसका फल वह किसी रूप में नहीं चाहता। आप कहेंगे कि मनुष्य ईश्वर के किये उपकारों का गुणगान या स्तुति, प्रार्थना और उपासना करता है, यह ईश्वर के लिये उपकारों का प्रतिफल ही तो हुआ पर ऐसी बात नहीं। मनुष्य ईश्वर के उपकारों का गुणगान करता है, वह अपनी प्रसन्नता, संतुष्टि कृतज्ञता ज्ञापन के लिये करता है। इसमें मनुष्य का स्वार्थ है न कि ईश्वर का। मनुष्य के गुणगान करने से या न करने से ईश्वर न खुश होता है और न नाराज। वह तो सिर्फ उसके किये कर्मों का फल देता है। हां, किसी के किये उपकार का एहसान मानना मनुष्य का कर्तव्य है और यह भी उसका एक गुण है। जिस प्रकार ईश्वर ईमानदारी, सच्चाई, दया, करुणा, उदारता, सहृदयता, निष्पक्षता आदि गुणों का फल अच्छा देता है, उसी प्रकार कृतज्ञता का फल भी ईश्वर अच्छा देता है। इसमें ईश्वर का खुश या नाराज होने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। ऐसी इच्छा जो निस्वार्थ भाव से परोपकारी कार्यों के लिए की जाती है, जिसमें किसी प्रकार से भी प्रतिफल लेने की भावना नहीं होती, उस इच्छा को ईक्षण कहते हैं जो केवल ईश्वर की ही होती है। मनुष्य मात्र के लिये असंभव है।

(180, महात्मा गांधी रोड, दोतल्ला, कोलकाता-700007)

(पृष्ठ 6 का शेष)

यह शक्ति अनेक प्रकार की है। स्थूल भौतिक सोम शुक्र है जिसके द्युम्न या तेज से रोम-रोम चमक उठता है। रेत के भस्म होने से जो क्रान्ति उत्पन्न होती है... मस्तिष्क को सीचंकर शुद्ध और बलवान् बनाना इसी रस का कार्य है। यह सोम रस, रेत या वीर्य-रूप से शरीर में संचित होता है। असंयम के कारण इसका शरीर से बाहर क्षय हो जाता है। जब तक प्राणापान-रूप अश्विनीकुमार इस सोम को पी सकते हैं, तब तक शरीर में जरा का आक्रमण नहीं होता। च्यवन की क्षीण शक्ति (Catabolic state of deplete Energy) को फिर से उर्जित और वसिष्ठ बनाने के लिए यह आवश्यक है कि शरीर के सोम-रस से उत्पन्न शक्ति शरीर में ही रहे अर्थात् प्राणापान उस सोम-रस का पान करें।

नभ से उतरा नव ध्रुवतारा।
जिसने जग को तम से तारा।
दया मूल से ज्योतिर्मय हो,
कहा व्योम ने जय टंकारा।

देवातिथि

वेदभक्त, देशभक्त
और गौ भक्त का प्रदाता है।
ईश्वर भक्त, दयावान
दयानन्द का जो निर्माता है।
परमपावन ऋषि भूमि टंकारा
जिसका निज नाम है।
ऋषि प्रेमियों का तीर्थस्थान है जो
आर्यों का गुरुधाम है।
आओ टंकारा को न भूले,
ऋषि भक्तों की यही पुकार है।
टंकारा की टंकार सुनकर,
वैदिक धर्म का करना विस्तार है।

-स्वामी शांतानन्द सरस्वती, भवानीपुर, कच्छ

ऐ मेरे मालिक,
तुझको कुछ बनाना ही हैं
तो मुझे शून्य बना दें
ताकि जिससे भी जुड़ जाऊँ
वो दस गुना हो जाये।

टंकारा समाचार जून, 2014
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2012-13-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2012-14
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-6-2014
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.05.2014

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय